लखनऊ

शनिवार 10 जनवरी, 2026

वर्ष : 11 । अंक: 141

मूल्य : 1 रुपये

पृष्ठ : 8

UPHIN/2014/57034

हिंदी दैनिक

आर्यावर्त क्रांति

एक दिन, तुम जागोगे और पाओगे कि उन चीज़ो को करने के लिए समय नहीं बचा है जो तुम हमेशा करना चाहते थे, इसलिए जो भी करना है अभी कर लो।

TODAY WEATHER

DAY 20° Hi

NIGHT 10° Low

संक्षेप

अब खत्म होगा प्रदूषण! भारत बनाएगा खुद का एयर-पॉल्यूशन मॉनिटरिंग डिवाइस

नई दिल्ली। पर्यावरण की दिशा में भारत ने एक जरूरी कदम उठाया है। इससे विदेशी सर्टिफिकेशन सिस्टम पर निर्भरता कम हो जाएगी। भारत ने CSIR-नेशनल फिजिकल लेबोरेटरी (NPL) में दुनिया की दूसरी नेशनल एनवायरनमेंटल स्टैंडर्ड लेबोरेटरी (NESL) स्थापित की है। फिलहाल ऐसी लैब सिर्फ ब्रिटेन में है। यह लेबोरेटरी देश में वायु प्रदूषण मॉनिटरिंग उपकरणों के लिए टेस्टिंग और कैलिब्रेशन सुविधाएं विकसित करेगी। फिलहाल, भारत में वायु प्रदूषण मॉनिटरिंग के लिए इस्तेमाल होने वाले ज्यादातर उपकरण इम्पोर्ट किए जाते हैं। हालांकि, ये इम्पोर्टेड इंस्ट्रूमेंट्स यूरोप या अमेरिका में सर्टिफिकेट जारी करने वाले देशों की पर्यावरणीय स्थितियों के आधार पर इंटरनेशनल एजेंसियों से प्रोडक्शन सर्टिफिकेशन के साथ आते हैं। CSIR-NPL के वैज्ञानिकों ने बताया कि क्योंकि उन देशों की पर्यावरणीय स्थितियां भारत में मौजूद स्थितियों से बहुत अलग हैं, इसलिए भारतीय परिस्थितियों में लंबे समय तक काम करने वाले इंस्ट्रूमेंट से होने वाले माप की क्वालिटी पर असर पड़ता है। केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री जितेंद्र सिंह ने सोमवार को CSIR-NPL (मेट्रोलॉजी के लिए सर्वोच्च संस्थान और भारत के राष्ट्रीय मानकों के संरक्षक) के 80वें स्थापना दिवस समारोह में NESL का उद्घाटन किया। यह अब न सिर्फ अलग-अलग पर्यावरणीय स्थितियों से होने वाली गड़बड़ी से निपटेगा, बल्कि मानकीकृत निगरानी उपकरणों के निर्माण में भी मदद करेगा।

जिस युवक के तलाक का केस लड़ रही थी महिला वकील, उसी से बनाए संबंध; क्या बोला सुप्रीम कोर्ट?

नई दिल्ली। एक महिला वकील ने एक शख्स के खिलाफ आपराधिक केस दर्ज कराया था, जिसमें सुप्रीम कोर्ट ने शख्स को अग्रिम जमानत दे दी है। शीर्ष अदालत ने महिला वकील को इस मामले को लेकर फटकार भी लगाई है और कहा कि आखिर एक वकील के तौर पर आपका यह कैसा व्यहार था, जिसमें आपने उसी के साथ संबंध बना लिए जिसका आप केस लड़ रही थी। बार एंड बेंच की रिपोर्ट के मुताबिक, जस्टिस बीवी नागरत्ना की अध्यक्षता वाली बेंच ने पहले महिला वकील को फटकार लगाई और एक क्लाइंट के साथ अतरंग संबंध बनाने के लिए एक वकील के तौर पर उसके आचरण पर सवाल उठाया। खासकर तब जब महिला वकील शख्स को तलाक दिलाने में मदद कर रही थी। सुप्रीम कोर्ट ने इस दिलचस्प केस में आरोपी को अग्रिम जमानत दे दी है। आरोपी फिलहाल लंदन में रह रहा है और बेंच ने कहा कि यदि वह भारत आता है तो उसे गिरफ्तारी से राहत मिलेगी। इसके अलावा अदालत ने महिला वकील से सवाल करते हुए पूछा कि आपने अपने ही क्लाइंट से अतरंग संबंध क्यों बनाए? बेंच ने यह भी कहा कि दोनों के बीच रिश्ता बना वो आपसी सहमति से था। दोनों में से कोई भी एक-दूसरे से शादी करने को तैयार नहीं था। फिर आखिर ऐसा क्यों किया गया बेंच ने साफ कहा कि महिला वकील की आपराधिक शिकायत बेवजह थी।

डिफेंस हब बनेगा लखनऊ

आत्मनिर्भर भारत से बढ़ी देश की ताकत: राजनाथ सिंह

नई दिल्ली, एजेंसी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को लखनऊ में अशोक लेलैंड के विनिर्माण संयंत्र का दौरा किया। इलेक्ट्रिक वाहन संयंत्र के उद्घाटन के अवसर पर आयोजित अपने दौरे के दौरान, उन्होंने संयंत्र में निर्मित हल्के सामरिक वाहन, मानवरहित जमीनी वाहन, बारूदी सुरंग से सुरक्षित वाहन और लॉजिस्टिक ड्रोन के उत्पादन की समीक्षा की। इस दौरे में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी उपस्थित थे। अपने उद्घाटन भाषण में रक्षा मंत्री ने कहा कि आज उत्तर प्रदेश में सरकार ने एक रक्षा गलियारा स्थापित किया है। सशस्त्र बलों से संबंधित हथियार और गोला-बारूद अब लखनऊ, कानपुर, झांसी, आगरा, चित्रकूट और अलीगढ़ में निर्मित किए जा रहे हैं।

रक्षा मंत्री ने कहा कि 34,000 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश पहले ही हो चुका है। बड़ी कंपनियां आ रही हैं और कारखाने स्थापित कर रही हैं। इससे स्थानीय लोगों को भी प्रत्यक्ष लाभ हुआ है। उन्होंने कहा कि लखनऊ में ब्रह्मोस फैक्ट्री भी स्थापित की गई है, जिसका प्रभाव आपने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान देखा होगा। भारत अब अपने हथियार स्वयं बना रहा है। इस सामरिक सुधार में उत्तर प्रदेश लगातार महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

उन्होंने यह भी कहा कि, "उत्तर प्रदेश सरकार ने एक अलग नीति बनाई है; एयरोस्पेस और रक्षा इकाई और रोजगार प्रोत्साहन नीति। इसका अर्थ है कि उत्तर प्रदेश को एक ऐसे राज्य के रूप में विकसित किया जा रहा है जहां बड़े पैमाने पर सैन्य उपकरणों का निर्माण किया जाएगा।" राजनाथ ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि रक्षा मंत्री के रूप में, जब मैं आत्मनिर्भरता की बात करता हूं, तो रक्षा क्षेत्र पूरी तरह से इस दिशा में आगे बढ़ चुका है। 2014 में हमारा घरेलू रक्षा उत्पादन 46,000 करोड़ रुपये था, जो अब बढ़कर 1.5 लाख करोड़ रुपये हो गया है। आज हमारा रक्षा निर्यात 25,000 करोड़ रुपये है, और 2030 तक यह बढ़कर 50,000 करोड़ रुपये हो जाएगा।

राज्य में औद्योगीकरण का जिक्र करते हुए रक्षा मंत्री ने कहा, 'उत्तर प्रदेश, जो कभी अराजकता के लिए जाना जाता था, आज औद्योगिक विकास के कारण एक नए युग में प्रवेश कर रहा है। उत्तर प्रदेश अब देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह अशोक लेलैंड इलेक्ट्रिक वाहन संयंत्र स्थानीय लोगों को काफी लाभ पहुंचाएगा।

'बदल गया है यूपी, अब अपनी क्षमताओं को परिणाम में बदलने वाला प्रदेश'

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। देश के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और भारी उद्योग एवं इस्पात मंत्री एचडी कुमारस्वामी ने शुक्रवार को लखनऊ के सरोजनी नगर क्षेत्र में बड़े वाहन की निर्माता कंपनी अशोक लेलैंड के इलेक्ट्रिक व्हीकल प्लांट का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री और लखनऊ के सांसद राजनाथ सिंह ने सिंदूर और रुद्राक्ष के पौधे भी लगाए और प्लांट का दौरा भी किया। अशोक लीलैंड के इस प्लांट में इलेक्ट्रिक वाहनों का उत्पादन किया जाएगा।

अशोक लेलैंड कंपनी के नवीन विनिर्माण संयंत्र के उद्घाटन के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने निर्माता कंपनी को शुभकामना देने के साथ आश्वस्त किया कि सरकार उनको व्यवसाय में पूरा सहयोग देगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि देश में इलेक्ट्रिक वाहन मैन्युफैक्चरिंग उभरता हुआ सेक्टर है। इलेक्ट्रिक व्हीकल ही भविष्य है। इलेक्ट्रिक वाहन को सरकार आगे बढ़ा रही है, क्योंकि दुनिया ग्लोबल वार्मिंग से परेशान है।

दुनिया के निवेशकों का पसंदीदा गंतव्य

सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आज यूपी न सिर्फ देश के बल्कि दुनिया के निवेशकों का पसंदीदा गंतव्य बन चुका है। यही कारण है कि यूपी में निवेश के लिए 45 लाख करोड़ रुपये के निवेश के प्रस्ताव

प्राप्त हो चुके हैं। आठ वर्षों में इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में जो काम हुआ है यही कारण है कि आज देश के 55 फीसदी एक्सप्रेस वे यूपी में हैं। प्रदेश में रैपिड रेल बनाई जा रही है। आज प्रदेश में 18 हजार स्टार्टअप काम कर रहे हैं।

भारत अब अपने हथियार खुद बनाता

रक्षामंत्री ने कहा कि अब यूपी में ब्रह्मोस मिसाइल का निर्माण किया जा रहा है। अब भारत एक कमजोर देश नहीं बल्कि अपने हथियार खुद बनाता है और इस कार्य में यूपी बढ़-चढ़कर अपनी भूमिका निभा रहा है। इसके लिए मैं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को बधाई देता हूं। प्रदेश में जिस तरह से कानून व्यवस्था के क्षेत्र में सुधार हुआ है वो अपने आप में एक मिसाल है। उन्होंने कहा कि इलेक्ट्रिक व्हीकल सेक्टर में रोजगार की बड़ी संभावनाएं हैं। उत्तर प्रदेश में तेजी से विकास हुआ और अच्छा माहौल मिलने से अब निवेश आ रहा है। यूपी में अब परिवर्तन दिखाई दे रहा। आज की यूपी उपद्रव नहीं उत्सव का प्रदेश है। उन्होंने कहा कि देश का 55 प्रतिशत एक्सप्रेस-वे उत्तर प्रदेश में है।

पीएम मोदी की फॉरेन पॉलिसी 'आत्मसमर्पण' है : खरगे

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने शुक्रवार को केंद्र सरकार पर उन खबरों को लेकर हमला बोला जिनमें कहा गया था कि भारतीय सरकार सरकारी ठेकों के लिए बोली लगाने वाली चीनी कंपनियों पर लगे पांच साल पुराने प्रतिबंध को हटाने की योजना बना रही है। उन्होंने मोदी सरकार की विदेश नीति में असंगति का आरोप लगाया। खरगे ने कहा कि भारत की विदेश नीति एक बेकाबू पेंडुलम की तरह झूलती है और साथ ही भारत की विदेश नीति में असंगति की ओर इशारा किया। उन्होंने कहा कि इसका खामियाजा जनता भुगत रही है।

प्रधानमंत्री मोदी के 'मैं देश को झुकाने नहीं दूंगा' वाले बयान पर कटाक्ष करते हुए खरगे ने कहा कि मौजूदा स्थिति इस दावे के बिल्कुल उलट है। खरगे ने X पर पोस्ट किया कि मैं देश को झुकने नहीं दूंगा।" आज जो हो रहा है, वह ठीक इसका उल्टा है। दो हालिया उदाहरण: चीनी कंपनियों पर 5 साल से लगा प्रतिबंध हटाया जा रहा है। गलवान में हमारे बहादुर भारतीय सैनिकों के बलिदान का मोदी ने चीन को क्लीन चिट देकर अपमान किया। अब चीनी कंपनियों के लिए 'लाल कालीन' बिछाकर, वह दिखा रहे हैं कि उनकी 'लाल आंखों' में 'लाल रंग' कितना गहरा है।

कांग्रेस अध्यक्ष ने भारत के रूसी तेल निर्यात पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की टिप्पणियों पर प्रधानमंत्री मोदी की चुप्पी की भी आलोचना करते हुए इसे आत्मसमर्पण का संकेत बताया। उन्होंने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प रोजाना भारत के रूसी तेल निर्यात पर टिप्पणी कर रहे हैं। लेकिन मोदी चुप हैं। वह अपनी आंखें फेर रहे हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने शर्मिला टैगोर को आवारा कुत्तों के मुद्दे पर लगाई फटकार

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने आवारा कुत्तों के मुद्दे पर आज शुक्रवार, 9 जनवरी को अभिनेत्री शर्मिला टैगोर को आवारा कुत्तों के मुद्दे पर फटकार लगाई और उनका वास्तविकता से परिचय कराया। सुप्रीम कोर्ट ने आवारा कुत्तों को लेकर शर्मिला टैगोर के दिए तर्क को पूरी तरह से वास्तविकता से परे बताया। अभिनेत्री शर्मिला टैगोर ने सुप्रीम कोर्ट के सामने सार्वजनिक स्थानों पर आवारा कुत्तों की समस्या को हल करने के लिए सुझाव दिए थे, जिन्हें सुप्रीम कोर्ट ने पूरी तरह से गलत ठहरा दिया। शर्मिला टैगोर के वकील ने AIIMS परिसर में कई वर्षों से रह रहे एक मिलनसार कुत्ते का उदाहरण देते हुए सुप्रीम कोर्ट से कहा, 'कुछ कुत्तों को 'सुला देना' जरूरी हो सकता है, लेकिन पहले एक उचित समिति द्वारा उन्हें आक्रामक के रूप में पहचाना जाना चाहिए।'

बांग्लादेश हिंसा पर भारत की दो टूक : विदेश मंत्रालय ने कहा- अल्पसंख्यकों का उत्पीड़न निंदनीय, खतरे में सुरक्षा

नई दिल्ली, एजेंसी। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने शुक्रवार को साप्ताहिक प्रेस वार्ता को संबोधित किया। इस दौरान बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न पर चिंता जताई। जायसवाल ने कहा, हम लगातार देख रहे हैं कि चरमपंथियों की ओर से अल्पसंख्यकों के साथ-साथ उनके घरों और व्यवसायों पर बार-बार हमले हो रहे हैं। यह चिंताजनक सिलसिला है। ऐसी सांप्रदायिक घटनाओं से तत्काल और सख्ती से निपटना जरूरी है। ऐसी घटनाओं को व्यक्तिगत प्रतिद्वंद्विता, राजनीतिक मतभेद या बाहरी कारणों से जोड़ने की प्रवृत्ति चिंताजनक है। इस तरह की अनदेखी अपराधियों को और भी बेखौफ बनाती है और अल्पसंख्यकों के बीच खौफ और असुरक्षा की भावना को और गहरा करती है। अमेरिकी संसद में रूसी तेल की खरीद को लेकर 500 फीसदी टैरिफ का प्रावधान करने वाले विधेयक को लेकर भी विदेश मंत्रालय ने प्रतिक्रिया दी। प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, हम प्रस्तावित विधेयक से अवगत हैं। हम घटनाक्रम पर बारीकी से नजर रख रहे हैं।

बंगाल में चुनाव से पहले बड़ा घमासान, दिल्ली में टीएमस सांसदों की गिरफ्तारी पर ममता बनर्जी का केंद्र सरकार पर हमला

नई दिल्ली, एजेंसी। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की अध्यक्ष ममता बनर्जी ने शुक्रवार को कोलकाता में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के खिलाफ विरोध प्रदर्शन शुरू किया। यह प्रदर्शन केंद्रीय एजेंसी द्वारा आई-पीएसी के कार्यालय पर छापेमारी के एक दिन बाद हुआ। बनर्जी ने दिल्ली में तृणमूल कांग्रेस के सांसदों की गिरफ्तारी की आलोचना करते हुए भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार पर लोकतांत्रिक विरोध को दबाने और कानून प्रवर्तन एजेंसियों का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में गरिमा और सम्मान पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता, और इस बात पर जोर दिया कि सत्ता में बैठे लोग नागरिकों और निर्वाचित प्रतिनिधियों के साथ मनमाने ढंग से व्यवहार नहीं कर सकते।

राजधानी में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के कार्यालय के बाहर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा आई-पीएसी कार्यालय पर की गई छापेमारी के विरोध में प्रदर्शन करने के लिए तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के कई सांसदों को हिरासत में लिया गया। एक्स पर एक पोस्ट में मुख्यमंत्री बनर्जी ने लिखा कि मैं हमारे सांसदों के साथ किए गए शर्मनाक और अस्वीकार्य व्यवहार की कड़ी निंदा करती हूं। गृह मंत्री के कार्यालय के बाहर विरोध प्रदर्शन करने के अपने लोकतांत्रिक अधिकार का प्रयोग करने के लिए निर्वाचित प्रतिनिधियों को सड़कों पर घसीटना कानून प्रवर्तन नहीं है - यह वर्दी में अहंकार है। यह लोकतंत्र है, भाजपा की निजी संपत्ति नहीं। लोकतंत्र सत्ता में बैठे लोगों की सुविधा या आराम पर नहीं चलता। जब भाजपा नेता विरोध करते हैं, तो वे लाल कालीन और विशेष विशेषाधिकारों की उम्मीद करते हैं। जब विपक्षी सांसद अपनी आवाज उठाते हैं, तो उन्हें घसीटा जाता है, हिरासत में लिया जाता है और अपमानित किया जाता है। यह दोहरा मापदंड भाजपा के लोकतंत्र के विचार को उजागर करता है - आज्ञापालन, असहमति नहीं।

पोस्ट में लिखा था यह स्पष्ट होना चाहिए: सम्मान पारस्परिक होता है। आप हमारा सम्मान करते हैं, हम आपका सम्मान करते हैं। आप हमें सड़क पर घसीटेंगे, और हम आपको सहिष्णुता, असहमति और लोकतांत्रिक नैतिकता के संवैधानिक विचार पर वापस खींच लाएंगे। यह हमारा भारत है। हम अधिकार से नागरिक हैं, किसी कुर्सी, बैज या सत्ता के पद के अधीन नहीं। कोई सरकार, कोई पार्टी और कोई गृह मंत्री यह तय नहीं कर सकता कि लोकतंत्र में सम्मान का हकदार कौन है।

अवैध रेत खनन और मनी लॉन्ड्रिंग के खिलाफ ईडी का बड़ा एक्शन, दस्तावेज-डिजिटल सबूत जब्त

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय जांच एजेंसी प्रवर्तन निदेशालय (ED) की कोलकाता जोनल ऑफिस ने अवैध रेत खनन और उससे जुड़ी मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में बड़ी कार्रवाई की है। ED ने अरुण सराफ, उनकी कंपनी जीडी माइनिंग प्राइवेट लिमिटेड और उससे जुड़े अन्य लोगों के खिलाफ प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट (PMLA, 2002) के तहत अभियोजन शिकायत 3 जनवरी को कोलकाता की स्पेशल कोर्ट में दाखिल की है।

इसके अलावा जांच एजेंसी ने 2 जनवरी को 149 अचल संपत्तियों को अस्थायी रूप से कुर्क कर दिया है, जिनकी कुल कीमत करीब 8।26 करोड़ रुपये बताई जा रही है। ये संपत्तियां जीडी माइनिंग प्राइवेट

लिमिटेड और उसकी अन्य ग्रुप कंपनियों के नाम पर रजिस्टर्ड हैं।

ईडी ने यह जांच पश्चिम बंगाल पुलिस की ओर से दर्ज की गई कई FIR के आधार पर शुरू की थी। इन FIR में रेत की चोरी, अवैध खनन, अवैध भंडारण और परिवहन के आरोप थे। आरोप यह भी है कि रेत की ढुलाई के लिए फर्जी और जाली ई-चालान का इस्तेमाल किया जा रहा था। ED की जांच में यह बात सामने आई है कि अरुण सराफ के नेतृत्व में जीडी माइनिंग प्राइवेट लिमिटेड ने बड़े पैमाने पर रेत की चोरी और अवैध बिक्री की। एक ही चालान पर कई बार ट्रिप करना, फेक ई-चालान बनाना और अवैध तरीके से रेत का भंडारण तथा बिक्री करना कंपनी के इस पूरे खेल का हिस्सा था। इन गतिविधियों से करोड़ों रुपये की अवैध कमाई यानी प्रोसीड्स ऑफ क्राइम (PoC) अर्जित की गई।

दस्तावेज और डिजिटल सबूत जब्त

छापेमारी के दौरान ED को कई अहम दस्तावेज और डिजिटल सबूत भी मिले, जिनसे इस पूरे फर्जीवाड़े की पुष्टि होती है। जांच में यह भी पता चला कि रेत के अवैध कारोबार से भारी मात्रा में बेहिसाब आय अर्जित की गई। ED ने CPWD की मदद से हाल के सालों में हुई रेत चोरी का आकलन भी कराया। जब इन गड़बड़ियों को लेकर आरोपियों से पूछताछ की गई तो वे संतोषजनक जवाब नहीं दे पाए।

अंकिता भंडारी, उन्नाव केस, इंदौर जहरीला पानी...राहुल गांधी ने कई मुद्दे उठाते हुए कहा- डबल इंजन सरकारों ने ज़िंदगी तबाह की

नई दिल्ली, एजेंसी। राहुल गांधी ने सोशल मीडिया पर पोस्ट के जरिए देश के कई मुद्दों पर बीजेपी से सवाल पूछा। उन्होंने कहा कि देश भर में भ्रष्ट जनता पार्टी की डबल इंजन सरकारों ने जनता की ज़िंदगी तबाह कर दी है। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार के साथ सत्ता का दुरुपयोग और अहंकार का ज़हर BJP की राजनीति में ऊपर से नीचे तक फैल चुका है। राहुल गांधी ने कहा कि इनके सिस्टम में गरीब, असहाय, मजदूर और मध्यमवर्ग की ज़िंदगी सिर्फ आंकड़ा है और विकास के नाम पर वसूली-तंत्र चल रहा है। राहुल गांधी ने कहा कि उत्तराखंड में अंकिता भंडारी की निर्मम हत्या ने पूरे देश को झकझोर दिया। लेकिन, सवाल आज भी वही है। सत्ता का संरक्षण BJP के किस VIP को बचा रहा है? कानून सबके लिए बराबर कब होगा?

'भ्रष्टाचार की ये सीधी मार है'

राहुल गांधी ने खांसी के सिरप से बच्चों की मौतें, सरकारी अस्पतालों में नवजातों को मारते चूहे, सरकारी स्कूलों की गिरती छतें, ये लापरवाही नहीं, भ्रष्टाचार की सीधी मार है। उन्होंने कहा पुल गिरते हैं, सड़कें धंसती हैं, ट्रेन हादसों में परिवार मिट जाते हैं और BJP सरकार हर बार वही करती है। सरकार फोटो-ऑप, ट्वीट और मुआवज़े की औपचारिकता करती है। उन्होंने कहा मोदी जी का डबल इंजन चल रहा है, लेकिन सिर्फ़ अरबपतियों के लिए। आम भारतीय के लिए ये भ्रष्टाचार की डबल इंजन सरकार विकास नहीं, तबाही की रफ्तार है, जो हर दिन किसी न किसी की ज़िंदगी कुचल रहा है।

उन्नाव रेप और इंदौर जहरीले पानी का किया ज़िक्र

राहुल गांधी ने उत्तर प्रदेश के उन्नाव कांड का भी ज़िक्र किया। राहुल गांधी ने कहा कि उन्नाव कांड को पूरा देश देख चुका है कि सत्ता के गुरूर में अपराधियों को कैसे बचाया गया और पीड़िता को न्याय के लिए कितनी कीमत चुकानी पड़ी। इंदौर में जहरीला पानी पीकर मौतें हों या गुजरात-हरियाणा-दिल्ली तक काले पानी और दूषित सप्लाई की शिकायतें हर तरफ बीमारियों का डर है। राहुल गांधी ने राजस्थान की अरावली हो या प्राकृतिक संसाधन, जहां-जहां अरबपतियों का लालच और स्वार्थ पहुंचा, वहां-वहां नियमों को रौंद दिया गया। उन्होंने कहा कि पहाड़ काटे जा रहे हैं, जंगल उजाड़े जा रहे हैं और जनता को बदले में मिल धूल, प्रदूषण और आपदा बदल रहा है।

'आतिशी के इस्तीफे से कम कुछ भी मंजूर नहीं', दिल्ली में भाजपा ने आम आदमी पार्टी को घेरा

नई दिल्ली, एजेंसी। आम आदमी पार्टी की नेता और दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष आतिशी मार्लेना के द्वारा कथित तौर पर सिख गुरु तेग बहादुर का अपमान किए जाने पर भाजपा शुक्रवार को सड़कों पर उतरी। पार्टी का आरोप है कि आम आदमी पार्टी के नेता जानबूझकर भारतीय धर्म-संस्कृति का मजाक उड़ाते हैं। भाजपा के अनुसार , आम आदमी पार्टी नेता पहले भी ऐसा कर चुके हैं और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान पर भी सिख समाज की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का आरोप है। भाजपा ने आम आदमी पार्टी के कार्यालय के बाहर जमकर प्रदर्शन किया और आतिशी मार्लेना और भगवंत मान के इस्तीफे की मांग की। पार्टी इस मुद्दे को पंजाब में भी मजबूती से उठाने की योजना बना रही है। हालांकि, आम आदमी पार्टी ने आरोप लगाया है कि आतिशी मार्लेना के वीडियो से छेड़छाड़ की गई है। आम आदमी पार्टी ने वीडियो के फॉरेंसिक जांच की मांग की है। भारतीय जनता पार्टी के महासचिव तरुण चुग ने अमर उजाला से कहा कि आम आदमी पार्टी के नेता जानबूझकर हिंदू और सिख गुरुओं के खिलाफ आपत्तिजनक बयानबाजी करते हैं। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी के नेताओं में भारतीय धर्म संस्कृति के खिलाफ थोड़ा सा भी सम्मान नहीं है, जिसके कारण वे बार-बार हिंदुओं और सिखों को अपमानित करने का काम करते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि इसी तरह के एक मामले में पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान से भी सिख समुदाय सफाई मांग रहा है।

कहां है युवक का कटा सिर? रायबरेली पुलिस कर रही तलाश, भांजी के गांव में मामा की हत्या

आर्यावर्त संवाददाता

रायबरेली। उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले में एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। यहां भांजी के घर आए एक युवक की बेरहमी से हत्या कर दी गई। आरोपियों ने पहले युवक का गला काटकर सिर धड़ से अलग किया और फिर शव को करीब डेढ़ सौ मीटर तक घसीटते हुए नईया नाले में फेंक दिया। आरोपी सिर को अपने साथ ले गए। सुबह शौच के लिए निकले ग्रामीणों ने जब सिर कटा शव देखा तो इलाके में सनसनी फैल गई और तत्काल पुलिस को सूचना दी गई।

यह घटना जायस थाना क्षेत्र के मुखेतिया गांव के पास बांदा-टांडा राष्ट्रीय राजमार्ग से कुछ दूरी पर स्थित नईया नाले की है। सूचना मिलने पर कोतवाली प्रभारी अमरेंद्र सिंह पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और क्षेत्राधिकारी दिनेश कुमार मिश्र को जानकारी दी। इसके बाद फोरेंसिक टीम को भी मौके पर बुलाया गया, जिसने घटनास्थल से साक्ष्य एकत्र किए। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी।

मृतक की पहचान कैसे हुई?

पुलिस को मृतक की पहचान उसके कपड़ों की तलाशी के दौरान जेब से मिले आधार कार्ड से हुई। आधार कार्ड के अनुसार मृतक की पहचान 50 वर्षीय विजय पुत्र बेनी माधव के रूप में हुई, जो प्रतापगढ़ जिले के सदर कोतवाली क्षेत्र स्थित धर्मशाला चौक का निवासी था। शिनाख्त होते ही घटना की जानकारी क्षेत्र में फैल गई, जिसके बाद रेलवेस्टेशन रोड बहादुरपुर में रहने वाली उसकी भांजी अलका भी मौके पर पहुंची और शव की पहचान अपने मामा विजय के रूप में की।

मृतक की भांजी अलका ने बताया कि उनके मामा विजय बुधवार दोपहर ही उनके घर आए थे। रात करीब साढ़े दस बजे उन्हें एक फोन आया, जिसके बाद उन्होंने कहा कि वह देवा शरीफ की दरगाह जा रहे हैं। इसके बाद से उनका कोई पता नहीं चला। गुरुवार सुबह उनकी नृशंस हत्या की सूचना मिलने से परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा।

घटना की गंभीरता को देखते हुए एसपी अर्पणा रजत कौशिक भी मौके पर पहुंचीं और घटनास्थल का निरीक्षण किया। उन्होंने मामले के जल्द खुलासे के लिए विशेष टीमें गठित करने के निर्देश दिए। पुलिस ने मृतक के परिजनों को सूचना दे दी है और बिना सिर के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

क्या बोले पुलिस अफसर?

अपर पुलिस अधीक्षक ज्ञानेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि जायस थाना क्षेत्र में विजय पुत्र बेनी माधव का शव नईया नाले में मिला है। परिजन की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज किया जा रहा है। शव का पोस्टमार्टम कराया जा रहा है और मृतक के सिर की तलाश लगातार की जा रही है। शुरुआती जानकारी में सामने आया है कि मृतक झाड़-फूंक का काम करता था, जिस एंगल से भी जांच की जा रही है।

बताया गया कि हत्यारों ने सबूत मिटाने के इरादे से शव को लगभग डेढ़ सौ मीटर तक घसीटा। जिस स्थान पर सिर को धड़ से अलग किया गया, वहां से खून के निशान साफ तौर पर नईया नाले तक दिखाई दे रहे थे। मृतक अपने पीछे पत्नी ज्योति और तीन छोटे बच्चे—राहुल (15 वर्ष), सिद्धार्थ (11 वर्ष) और सम्राट (7 वर्ष)—को छोड़ गया है। घटना के बाद से पूरे परिवार में कोहराम मचा हुआ है।

बुजुर्ग की गला रेतकर निर्मम हत्या, घर में जमीन पर पड़ा मिला शव, शरीर पर चोट के निशान

आर्यावर्त संवाददाता

हाथरस। एक वृद्ध का शव घर के अंदर पड़ा मिला है। बुजुर्ग की गला रेतकर निर्मम हत्या की गई है। शव पर चोट के निशान हैं। फॉरेंसिक टीम व डॉग स्क्वाड टीम जांच में जुट गई हैं।

हाथरस में हसायन थाना अंतर्गत अंडोली गांव में 73 वर्षीय अमरनाथ पुत्र श्याम लाल की गला रेतकर हत्या कर दी गई। 9 जनवरी की सुबह घर में लहूलुहान हालत में शव मिलने से हड़कंप मच गया। गर्दन, चेहरे व आंख पर चोट के निशान हैं।

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस के आला अधिकारी मौके पर पहुंच गए। फॉरेंसिक व डॉग स्क्वाड टीम घटनास्थल पर छानबीन कर रही है।

निबंध लेखन में संस्कार ने मारी बाज़ी

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सुल्तानपुर। विश्व हिंदी दिवस के पूर्व संध्या पर हिंदी 'हमारी पहचान विषय' पर आर.ए.वी.डी. स्पेक्ट्रम एकेडमी मूँगर जयसिंहपुर में शीतकालीन अवकाश के चलते ऑनलाइन निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

जिसमें विद्यालय के विभिन्न कक्षाओं से सत्रह बच्चों ने प्रतिभाग किया जिसमें संस्कार वर्मा को प्रथम स्थान, अभिनव मिश्रा को द्वितीय स्थान और अवीर सिंह को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। प्रतियोगिता में साध्वी वर्मा, अनुभव विक्रम सिंह, सोनाक्षी सिंह, अर्पित वर्मा, कार्तिक पांडेय, अभिनव अग्रहरि, आंचल यादव, आनंद सिंह, अनन्या वर्मा, समर प्रताप सिंह आदि छात्रों ने प्रतिभाग किया।निर्णायक के रूप में पाठ्य-पुस्तक लेखक,कवि एवं साहित्यकार सर्वेश कांत वर्मा 'सरल' ने विद्यार्थियों की भाषा, विचार और प्रस्तुति की सराहना की। निर्णय देते समय उन्होंने सरल भाषा, मौलिक विचार और विषय की स्पष्टता को मुख्य आधार बताया। प्रतियोगिता में द्वितीय निर्णायक विद्यालय की हिंदी अध्यापिका एवं साहित्यकार अमिता सिंह ने विद्यार्थियों को लेखन के महत्व के बारे में बताया और नियमित पढ़ने-लिखने की सलाह दी। विद्यालय के प्रधानाचार्य पंकज मिश्रा ने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने वाले सभी बच्चों को विश्व हिंदी दिवस पर पुरस्कृत किया जाएगा।

चीनी मिल के जीएम निलंबित, 15 दिन में जांच रिपोर्ट तलब

सुल्तानपुर। किसान सहकारी चीनी मिल लिमिटेड सुल्तानपुर में कथित भ्रष्टाचार और प्रशासनिक अनियमितताओं को लेकर उत्तर प्रदेश शासन ने सख्त कार्रवाई की है। उद्योग एवं गन्ना विकास विभाग ने मिल के महाप्रबंधक (जीएम) राजेंद्र प्रसाद को तत्काल प्रभाव से निलंबित करते हुए पूरे मामले की विभागीय जांच के आदेश जारी किए हैं। जांच रिपोर्ट 15 दिनों के भीतर शासन को सौंपने के निर्देश दिए गए हैं। यह कार्रवाई भाजपा नेता व गन्ना विकास समिति के चेयरमैन 'शिवपाल सिंह गांधी द्वारा' गन्ना एवं चीनी उद्योग मंत्री को भेजी गई लिखित शिकायत तथा शासन स्तर पर की गई समीक्षा के बाद की गई है। गन्ना विकास समिति के चेयरमैन शिवपाल सिंह गांधी ने अपनी शिकायत में आरोप लगाया था कि किसान सहकारी चीनी मिल सुल्तानपुर में महाप्रबंधक द्वारा नियमों को दरकिनार कर मनमाने प्रशासनिक निर्णय लिए गए।

कोटवाधाम से लौट रही थी पत्नी, पति ने नहर में दे दिया धक्का, मौत

आर्यावर्त संवाददाता

बाराबंकी। उत्तर प्रदेश के बाराबंकी के सिरौलीगौसपुर दस दिन पहले संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हुई विवाहिता का शव शारदा सहायक नहर में अद्रा पुल के पास मिला। पुलिस ने मामले का खुलासा करते हुए कहा कि जमीन हड़पने की नीयत से पति ने ही पत्नी की हत्या की थी। आरोपी पति को गिरफ्तार कर लिया गया है।दरियाबाद थाना क्षेत्र के कोडरा गांव निवासी मोहिनी ने बताया कि उन्होंने अपनी बेटी सुनीता (26) का विवाह वर्ष 2016 में असंद्रा थाना क्षेत्र के पूरे छविनाथ शुक्ल मजरा सूरजपुर गांव निवासी मनोज कुमार रावत से किया था। कुछ समय पूर्व पति केशवराम की मौत के बाद करीब 12 बीघा जमीन सुनीता के नाम दर्ज हो गई थी। आरोप है कि इसी जमीन को अपने नाम कराने के लिए दामाद मनोज सुनीता को लगातार प्रताड़ित कर रहा था।

पति के साथ कोटवाधाम गई थी पत्नी

पीड़िता की मां के अनुसार, 30 दिसंबर को सुनीता अपने पति मनोज के साथ कोटवाधाम मंदिर दर्शन के लिए गई थी, जहां से वह संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई। इस दौरान आरोपी के छोटे भाई उमेश ने असंद्रा थाने में भाई-भाभी की गुमशुदगी दर्ज कराई। बाद में महिला की मां ने दामाद मनोज, उसके भाई उमेश और अन्य परिजनों पर 12 बीघा जमीन के लालच में पुत्री की हत्या का आरोप लगाते हुए तहरीर दी। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपी पति मनोज ने कोटवाधाम से लौटते समय अद्रा पुल के पास सुनीता को शारदा सहायक नहर में धक्का दे दिया था। पूछताछ में मनोज ने अपना जुर्म कबूल कर लिया। उसकी निशानदेही पर सिरौलीगौसपुर क्षेत्र से गुजर रही नहर से सुनीता का शव बरामद किया गया।

पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार

असंद्रा पुलिस ने बुधवार को मुकदमा दर्ज कर गुरुवार को आरोपी मनोज कुमार को सूरजपुर फार्म तिराहे से गिरफ्तार कर लिया। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है और आरोपी को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। मामले में आगे की कार्रवाई जारी है।

सरकारी आवास खाली कराने के नोटिस पर प्रशिक्षण अधिकारी ने डीएम से की शिकायत

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सुल्तानपुर। राजकीय शिल्पकार अनुदेशक प्रशिक्षण संस्थान में तैनात प्रशिक्षण अधिकारी ध्रुव देव मिश्र ने सरकारी आवास खाली कराने के नोटिस को लेकर जिलाधिकारी से शिकायत की है। प्रशिक्षण अधिकारी ने प्रार्थना पत्र देकर आवास खाली न कराए जाने और पूरे मामले की जांच कर न्यायोचित निर्णय लेने की मांग की है।प्रार्थना पत्र में बताया गया कि वह मूल रूप से अंबेडकरनगर जनपद के निवासी हैं और जून 2025 में स्थानांतरण के बाद सुल्तानपुर में पदस्थापित हुए। संस्थान के प्रधानाचार्य द्वारा सरकारी आवास टाइप-2 जीटी-1 खाली कराने के लिए नोटिस जारी किया गया। इसके क्रम में 5 जनवरी 2026 को टीम द्वारा भौतिक सत्यापन कर 10 दिन के भीतर आवास खाली करने का निर्देश दिया गया।प्रशिक्षण अधिकारी का कहना है कि पूर्व की भांति उनके वेतन से मकान किराया भत्ता की कटौती की जा रही है और इसके बावजूद उन्हें आवास खाली करने का नोटिस दिया गया, जो अनुचित है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि वह अवैध रूप से आवास में निवास नहीं कर रहे हैं तथा दोनों संस्थानों का परिसर एकीकृत है, जिसका कोई बंटवारा नहीं हुआ है।प्रार्थना पत्र में आरोप लगाया गया है कि एक अन्य कर्मचारी और उसकी पत्नी को मानदेय पर रखकर परिसर में अवैध रूप से रहने दिया जा रहा है और उनके मानदेय का भुगतान किराये के रूप में लिया जा रहा है। वहीं, एक अन्य आवास खाली होने के बाद भी उसे आवंटित नहीं किया गया और अतिरिक्त धनराशि की मांग किए जाने का आरोप लगाया गया है। इसके अलावा एक महिला अनुदेशिका को न्यायसंगत ढंग से आवंटित आवास पर पुनर्विचार किए जाने की मांग भी उठाई गई है।

जरूरतमंदों और गरीबों के लिए लगातार चल रहा है कंबल वितरण अभियान

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सुल्तानपुर। कड़ाके की ठंड से जूझ रहे असहायों और गरीबों की मदद के लिए लगातार शियाने हैदरे कर्रार वेलफेयर एसोसिएशन ने सब स्टेशन, तिकोनिया पार्क, रेलवे स्टेशन, अमहट चौराहा, महुआरिया दरगाह आदि जगहों में कंबल वितरण अभियान की कड़ी में फिर से बड़े पैमाने पर कंबल वितरण किया। संस्था के प्रदेश अध्यक्ष अलमदार हुसैन ने बताया कि अमहट चौराहा, रेलवे स्टेशन, महुआरिया दरगाह, बस स्टाप आदि जगहों पर हर धर्म और समुदाय के जरूरतमंदों को कंबल उपलब्ध कराए गए। हर साल की तरह इस साल भी संस्था ने सुलतानपुर में जरूरतमंद परिवारों को कड़ाके की ठंड से बचाने के लिए हजारों कंबल वितरित किए। इस साल विशेषकर कंबल वितरण अभियान झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले जरूरतमंद परिवारों, सड़क किनारे मजदूरी करने वालों और रेडी-पटरी पर रहने वालों के लिए चलाया जा रहा है और साथ ही शियाने हैदरे कर्रार वेलफेयर एसोसिएशन की टीम लगातार जरूरतमंद परिवारों को कड़ाके की ठंड से बचने के लिए हरसंभव मदद कर रही है। कड़ाके की ठंड से जूझ रहे जरूरतमंद परिवारों के लिए शियाने हैदरे कर्रार वेलफेयर एसोसिएशन ने इस साल अब तक हजारों कंबल उपलब्ध कराए हैं, जबकि कंबल वितरण अभियान एक महा तक इसी तरह जारी रहेगा। शियाने हैदरे कर्रार वेलफेयर एसोसिएशन के महामंत्री एडवोकेट अली जाफरी व वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ मोहतशम रज़ा ने कहा कि इस साल जनवरी महीने में अनुमान से अधिक कड़ाके की ठंड पड़ रही है, जिसकरण झुग्गी बस्तियों में गुजर कर रहे गरीब लोगों का बेहाल हो रखा है। ऐसे में जरूरतमंदों को ठंड से राहत कंबल ही दिला सकता है। इसलिए शियाने हैदरे कर्रार वेलफेयर एसोसिएशन की टीम ने इस एक महीने से लगातार कंबल वितरण कर रहा है। ये जानकारी संस्था के युवा प्रदेशध्यक्ष फज़ल रिज़वी फैज़ ने दी।

छोटी बीमारी को एआई पर खोज हाइपोकॉन्ड्रिया का हो रहे शिकार, इस वजह से बढ़ रही बेचैनी

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

वाराणसी। काशी में युवा एक नई तरह की बेचैनी भरी मानसिक बीमारी से घिरते जा रहे हैं। उनकी इस बेचैनी का कारण मोबाइल, इंटरनेट और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर उपलब्ध स्वास्थ्य संबंधी भ्रमित करने वाली जानकारियां हैं। छोटी सी शारीरिक परेशानी की ऑनलाइन जानकारी देखकर कई युवा खुद को गंभीर रोगी मान बैठते हैं। मनोविज्ञान की भाषा में इस स्थिति को साइबरकॉन्ड्रिया कहा जाता है।

आईएमएस बीएचयू मनोचिकित्सक विभाग के प्रो. संजय गुप्ता का कहना है कि इंटरनेट और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का समझदारी से उपयोग करना चाहिए। बिना आवश्यकता और चिकित्सकीय सलाह के ऑनलाइन जानकारी पर निर्भर रहना मानसिक समस्याओं को बढ़ा सकता है।

आम तौर पर किसी तरह की स्वास्थ्य संबंधी समस्या पर युवाओं सहित अन्य लोगों को विशेषज्ञों के पास जाने की सलाह दी जाती हैं। इसके बाद भी युवा इसका पालन नहीं करते हैं। वह जरा सी परेशानी पर बीमारी का इलाज पहले ऑनलाइन माध्यम से खोजने लग जाते हैं। सही जानकारी न मिलने से वे परेशान हो जाते हैं। बीएचयू सहित अन्य अस्पतालों में मनोचिकित्सक के पास हर दिन बड़ी संख्या में ऐसी समस्या लेकर युवा पहुंच रहे हैं।

केस-1

लंका क्षेत्र की एक लड़की जो बीएचयू में बीएससी जियोलॉजी की पढ़ाई कर रही हैं। पिछले सप्ताह पीरियड्स से जुड़ी समस्या होने पर डॉक्टर से सलाह लेने के बजाय उसने चैटजीपीटी पर जानकारी खोजी। वहां बताए गए लक्षण और संभावित कारण पढ़कर उन्हें लगा कि वह किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित हैं। छात्रा के अनुसार शारीरिक परेशानी उतनी नहीं थी, जितना डर दिमाग में बैठ गया।

केस-2

सुंदरपुर की रहने वाली 25 वर्षीय छात्रा जो जेआरएफ की तैयारी कर रही हैं, उन्होंने कहा कि एक बार सीने में हल्का दर्द होने पर उन्होंने चैट जीपीटी पर सर्च किया। दर्द तो कुछ देर में ठीक हो गया, लेकिन कई दिनों तक डर बना रहा। ऐसा लग रहा था जैसे कुछ गलत हो गया। बाद में जांच में सबकुछ सामान्य निकला, लेकिन मानसिक तनाव खत्म नहीं हुआ।

केस-3

लंका क्षेत्र में एक पीजी में रहने वाली छात्रा जो बीएचयू में बीएससी जियोग्राफी की पढ़ाई कर रही हैं। इन्होंने फिटनेस के लिए एक हेल्थ ऐप डाउनलोड किया था। कभी हार्ट रेट ज्यादा दिखती, कभी नींद कम। वह बताती हैं कि इन आकड़ों को देखकर मैं इंटरनेट पर बीमारियों के बारे में पढ़ने लगी। धीरे-धीरे लगने लगा कि मुझे कोई गंभीर बीमारी है। इसका असर मेरी पढ़ाई पर भी पड़ा। सोशल मीडिया पर वायरल हेल्थ वीडियो और रील्स इस डर को और गहरा कर रही हैं।

इंटरनेट और एआई का संतुलित उपयोग जरूरी

आईएमएस बीएचयू मनोचिकित्सक विभाग के प्रो. संजय गुप्ता ने बताया कि इन दिनों लगातार इंटरनेट पर बीमारी से जुड़ी जानकारी खोजने वाले कुछ लोगों में हाइपोकॉन्ड्रिया जैसी बीमारी होती है। इस स्थिति में व्यक्ति को यह भ्रम हो जाता है कि उसे गंभीर बीमारी है या होने वाली है, जबकि जांच में कोई गंभीर रोग सामने नहीं आता। युवाओं को इंटरनेट और एआई का सीमित उपयोग ही करना चाहिए। यही इस मानसिक भ्रम से बचने का उपाय है। हाइपोकॉन्ड्रिया से पीडित व्यक्ति सामान्य शारीरिक लक्षणों जैसे- सिरदर्द, थकान, पेट की आवाज या हल्के दर्द को भी कैंसर, हृदय रोग जैसी गंभीर बीमारियों से जोड़कर देखने लगता है।

शिक्षकों के प्रोन्नत वेतनमान हेतु बीएसए ने बनाई तीन सदस्यीय कमेटी

सुल्तानपुर। नववर्ष पर उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ लम्भुआ के अध्यक्ष रणवीर सिंह के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने बीएसए उपेंद्र गुप्ता से मुलाकात कर शिक्षकों के वर्षों से लम्बित देयक प्रोन्नत वेतनमान के निस्तारण हेतु एक कमेटी बनाए जाने का अनुरोध किया था। उपर्युक्त अनुरोध के क्रम में बीएसए द्वारा तीन सदस्यीय कमेटी बनाई गई जिसमें खंड शिक्षा अधिकारी नगर क्षेत्र दिलीप कुमार सहायक वित्त एवं लेखाधिकारी समग्र शिक्षा नरेंद्र पाल सिंह तथा वरिष्ठ लिपिक अविनाश यादव को नामित करते हुए प्रोन्नत वेतनमान सूची को 15 दिवस के अंदर ब्लाकों से संपर्क कर निस्तारित करने हेतु निर्देशित किया गया है। कूरेभार मंत्री वैभव भटनागर द्वारा बताया गया कि जनपद में 2010 के बाद से ही प्रोन्नत वेतनमान सूची निर्गत नहीं हो पाई थी जिससे बहुत सारे वरिष्ठ शिक्षक इस लाभ से वंचित रहे है जिनको अब

दलित बेटी का अपहरण–मां की हत्या, अतुल प्रधान को गांव जाने से रोका, धरने पर बैठे विधायक, छावनी बना क्षेत्र

आर्यावर्त संवाददाता

मेरठ। मेरठ के सरधना थाना सरधना क्षेत्र के गांव कपसाड़ में दलित महिला की हत्या और नाबालिग बेटी के अपहरण के मामले को लेकर हालात लगातार तनावपूर्ण बने हुए हैं। इसी बीच सरधना विधायक अतुल प्रधान जब पीड़ित परिवार से मिलने गांव पहुंचे, तो पुलिस ने उन्हें गांव के बाहर ही रोक दिया। सुरक्षा व्यवस्था का हवाला देकर पुलिस ने आगे बढ़ने नहीं दिया, जिससे मौके पर हंगामा हो गया।

पुलिस और समर्थकों में धक्का-मुक्की

विधायक को रोके जाने के दौरान पुलिस और समर्थकों के बीच धक्का-मुक्की भी हुई। हालात बिगड़ते देख पुलिस ने अतिरिक्त बल बुला लिया। माहौल गर्माने के बाद प्रशासन पूरी तरह अलर्ट मोड पर आ गया।

धरने पर बैठे विधायक, लगाए गंभीर आरोप

पुलिस कार्रवाई से नाराज विधायक अतुल प्रधान मौके पर ही धरने पर बैठ गए और प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की। विधायक ने आरोप लगाया कि पीड़ित परिवार से मिलने से रोका जाना गलत है और यह सरकार की संवेदनहीनता को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि जब तक आरोपियों की गिरफ्तारी और अपहृत नाबालिग की बरामदगी नहीं होती, वह पीछे नहीं हटेंगे।

गांव के सभी रास्ते सील, बाहरी लोगों की एंट्री बंद

इधर हालात बिगड़ने की आशंका को देखते हुए पुलिस ने गांव कपसाड़ के चारों ओर से रास्ते सील कर दिए हैं। गांव में भारी पुलिस बल और पीएसी तैनात की गई है। किसी भी बाहरी व्यक्ति के प्रवेश पर रोक लगा दी गई है। वरिष्ठ अधिकारी लगातार मौके पर डटे हुए हैं।

अंतिम संस्कार से इंकार, मांगों पर अड़े परिजन

पीड़ित परिजन अब भी आरोपियों की गिरफ्तारी और अपहृत नाबालिग बेटी की सकुशल बरामदगी की मांग पर अड़े हुए हैं। परिजनों ने महिला का अंतिम संस्कार करने से साफ इंकार कर दिया है। पुलिस और प्रशासन लगातार वार्ता कर स्थिति संभालने की कोशिश में जुटे हैं।

पुलिस का दावा-स्थिति नियंत्रण में

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि हालात नियंत्रण में हैं। नामजद आरोपियों की गिरफ्तारी और किशोरी की बरामदगी के लिए विशेष टीमें लगाई गई हैं। गांव में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस बल की तैनाती फिलहाल जारी रहेगी।

मकर संक्रांति पर राज्य स्तरीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता, 14 जनवरी को होगा आयोजन

सुल्तानपुर। मकर संक्रांति के पावन पर्व पर जनपद सुलतानपुर एक बार फिर खेल प्रतिभाओं के महामुकाबले का गवाह बनेगा। जनता क्लब के तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बाबू कामेश्वर सिंह स्मारक राज्य स्तरीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन आगामी 14 जनवरी (बुधवार) को मोतिगरपुर विकासखंड के लामा बाजार स्थित ग्राम सभा गोपालपुर बड़ागांव में किया जाएगा। कार्यक्रम के संयोजक एवं 'कांग्रेस जिलाध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा' ने बताया कि यह प्रतियोगिता पिछले 54 वर्षों से निरंतर आयोजित की जा रही है, जो क्षेत्र की समृद्ध खेल परंपरा और अनुशासन की पहचान बन चुकी है। इस प्रतियोगिता की शुरुआत वर्ष 1973 में मकर संक्रांति के दिन क्षेत्र के चर्चित वॉलीबॉल खिलाड़ी एवं जनता क्लब के तत्कालीन कप्तान स्वर्गीय बृजेश सिंह 'भोला' द्वारा की गई थी।

यूपी में गौ-आश्रय स्थलों पर मजबूत मॉनिटरिंग सिस्टम लागू, 4000 से अधिक स्थलों पर लगे सीसीटीवी

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश के गौ-आश्रय स्थलों पर लगातार निगरानी, प्रबंधन और सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण का कार्य तेज गति से जारी है। अधिकारियों की मानें तो प्रदेश के 75 जनपदों के कुल 6718 ग्रामीण गौ-आश्रय स्थलों में से 65 जनपदों के 4366 गौ-आश्रय स्थलों पर सीसीटीवी के माध्यम से निगरानी तंत्र को मजबूत किया गया है।

बाकी जनपदों में भी निगरानी तंत्र को सुदृढ़ किए जाने की कार्यवाही प्रक्रिया में है। साथ ही प्रदेश के हरदोई, आगरा, जालौन सहित 20 जनपदों के विकास भवनों में केंद्रीकृत निगरानी कंट्रोल रूम स्थापित किए हैं, जिसके माध्यम से आश्रय स्थलों की व्यवस्थाओं पर सतत नजर रखी जा रही है।

योगी सरकार निराश्रित गोवंश के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रतिबद्ध है। गौ-आश्रय स्थलों पर गोवंश के लिए शेड, स्वच्छ भोजन एवं पेयजल की व्यवस्था, खड़ंजा, भूसा भंडार गृह, उपचार कक्ष, प्रकाश और सोलर लाइट जैसी सुविधाओं को सुदृढ़ और व्यवस्थित ढंग से विकसित किया जा रहा है।

पशुपालन विभाग के प्रमुख सचिव मुकेश मेश्राम ने बताया कि गौ-आश्रय स्थलों की बेहतर निगरानी एवं व्यवस्था के समन्वय के लिए राज्य के 20 जनपदों के विकास भवनों में कंट्रोल रूम स्थापित किए गए हैं। हरदोई, आगरा, जालौन, झांसी, सीतापुर, बाराबंकी, रायबरेली, जौनपुर, अयोध्या, आजमगढ़, पीलीभीत, कौशांबी, शामली, बस्ती, अंबेडकरनगर, बलिया, एटा, अमरोहा, फर्रुखाबाद और चंदौली में ये कंट्रोल रूम कार्यरत हैं। शेष जनपदों में भी चरणबद्ध ढंग से यह व्यवस्था सुदृढ़ की जा रही है।

उन्होंने कहा कि निगरानी तंत्र मजबूत होने से गौवंश की देखभाल अधिक व्यवस्थित और जिम्मेदाराना ढंग से हो रही है। किसी भी प्रकार की लापरवाही की स्थिति में तत्काल कार्रवाई संभव हो रही है। गो-आश्रय स्थलों को आत्मनिर्भर और सक्षम बनाने के साथ-साथ ठंड से सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। स्थलों पर हरा चारा, तिरपाल, काउ-कोट, अलाव, औषधियां, उपचार सुविधा और पेयजल की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की गई है। यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि ठंड अथवा अव्यवस्था के कारण किसी भी गोवंश की मृत्यु न हो।

योगी सरकार ने गौ-आश्रय स्थलों की निगरानी और सुविधाओं को किया सुदृढ़, 4366 स्थलों पर सीसीटीवी से सतत निगरानी

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश के गौ-आश्रय स्थलों पर निगरानी, प्रबंधन और सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण का कार्य तेज गति से जारी है। प्रदेश के 75 जनपदों में संचालित 6718 ग्रामीण गौ-आश्रय स्थलों में से 65 जनपदों के 4366 स्थलों पर सीसीटीवी के माध्यम से निगरानी तंत्र को मजबूत किया जा चुका है, जबकि शेष जनपदों में भी यह प्रक्रिया प्रगति पर है। इसके साथ ही हरदोई, आगरा, जालौन सहित 20 जनपदों के विकास भवनों में केंद्रीकृत निगरानी कंट्रोल रूम स्थापित किए गए हैं, जिनके जरिए आश्रय स्थलों की व्यवस्थाओं पर लगातार नजर रखी जा रही है।योगी सरकार निराश्रित गोवंश के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रतिबद्ध बताते हुए गौ-आश्रय स्थलों पर मूलभूत सुविधाओं को व्यवस्थित रूप से विकसित कर रही है। इन स्थलों पर गोवंश के लिए शेड, स्वच्छ भोजन और पेयजल, खड़ंजा, भूसा भंडार गृह, उपचार कक्ष, पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था और सोलर लाइट जैसी सुविधाओं को सुदृढ़ किया जा रहा है, ताकि गोवंश की देखभाल मानक और सुरक्षित ढंग से सुनिश्चित हो सके।पशुपालन विभाग के प्रमुख सचिव मुकेश मेश्राम ने बताया कि बेहतर निगरानी और समन्वय के उद्देश्य से हरदोई, आगरा, जालौन, झांसी, सीतापुर, बाराबंकी, रायबरेली, जौनपुर, अयोध्या, आजमगढ़, पीलीभीत, कौशांबी, शामली, बस्ती, अंबेडकरनगर, बलिया, एटा, अमरोहा, फर्रुखाबाद और चंदौली में कंट्रोल रूम कार्यरत हैं। इन कंट्रोल रूमों के माध्यम से आश्रय स्थलों की व्यवस्थाओं की सतत मॉनिटरिंग की जा रही है, जिससे किसी भी प्रकार की लापरवाही पर तत्काल कार्रवाई संभव हो पा रही है। शेष जनपदों में भी चरणबद्ध तरीके से यह व्यवस्था लागू की जा रही है।ठंड के मौसम को देखते हुए गौ-आश्रय स्थलों पर विशेष सतर्कता बरती जा रही है। गोवंश को ठंड से बचाने के लिए हरा चारा, तिरपाल, काउ-कोट, अलाव, आवश्यक औषधियां, उपचार सुविधाएं और पर्याप्त पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है। सरकार का उद्देश्य है कि ठंड या किसी भी प्रकार की अव्यवस्था के कारण किसी भी गोवंश की मृत्यु न होने पाए और सभी गौ-आश्रय स्थल आत्मनिर्भर तथा सक्षम बनें।

राजस्व बढ़ाने के लिए नगर निगम का बड़ा कदम, 10 व 11 जनवरी को भी खुले रहेंगे जोनल कार्यालय और कर काउंटर

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। नगर निगम लखनऊ ने वर्तमान वित्तीय वर्ष की समाप्ति से पहले राजस्व संग्रहण को तेज करने के उद्देश्य से एक अहम निर्णय लिया है। नगर आयुक्त के आदेश पर आगामी शनिवार और रविवार, 10 व 11 जनवरी 2026 को नगर निगम के सभी जोनल कार्यालय और कर काउंटर खोले रखने का निर्णय लिया गया है। इन दोनों दिनों में कर काउंटर सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक संचालित रहेंगे, जिससे नागरिकों को कर भुगतान में अतिरिक्त सुविधा मिल सके।वर्तमान वित्तीय वर्ष के समापन में अब तीन माह से भी कम समय शेष है। ऐसे में नगर निगम प्रशासन द्वारा गृहकर और जलकर की वसूली बढ़ाने तथा निर्धारित राजस्व लक्ष्य की पूर्ति के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। इसी क्रम में सार्वजनिक अवकाश के दिन भी कर संबंधी कार्य किए जाने के निर्देश जारी किए गए हैं, ताकि अधिक से अधिक करदाता अपने बकाया कर का भुगतान कर सकें।नगर निगम प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि इन दोनों दिनों में सभी जोनल कार्यालयों में भवन स्वामियों से संबंधित कर निर्धारण, डाटा फीडिंग, संशोधन, आपत्तियों का निस्तारण और कर जमा करने से जुड़े सभी कार्य किए जाएंगे। संबंधित अधिकारियों और कर्मचारियों को यह भी निर्देश दिए गए हैं कि वे करदाताओं से सीधे संपर्क कर उन्हें बकाया गृहकर और जलकर जमा कराने के लिए प्रेरित करें, जिससे राजस्व संग्रहण को गति मिल सके।इसके साथ ही नगर निगम द्वारा सभी वार्डों में विशेष कैंप आयोजित करने के भी निर्देश दिए गए हैं। इन कैंपों का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाएगा, ताकि नागरिकों को अपने ही क्षेत्र में कर निर्धारण और कर भुगतान की सुविधा उपलब्ध हो सके।

मुख्यमंत्री आवास योजना–ग्रामीण से वंचितों को मिला पक्का घर, अब तक 4 .61 लाख आवास आवंटित

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के मार्गदर्शन में मुख्यमंत्री आवास योजना–ग्रामीण का प्रभावी और पारदर्शी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जा रहा है। इस योजना के माध्यम से राज्य सरकार समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े जरूरतमंद परिवारों को आवासीय सुविधा उपलब्ध कराकर उन्हें सम्मानजनक जीवन और समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य कर रही है। जिन परिवारों को किसी कारणवश प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण के अंतर्गत पक्का मकान नहीं मिल सका था, उन्हें मुख्यमंत्री आवास योजना–ग्रामीण के माध्यम से आवास का लाभ दिया गया है।

राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2018-19 से अब तक मुख्यमंत्री आवास योजना–ग्रामीण के अंतर्गत कुल 4.61 लाख आवास आवंटित किए जा चुके हैं। इनमें से 3.65 लाख आवासों का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है, जबकि शेष आवासों का निर्माण कार्य विभिन्न चरणों में प्रगति पर है। जनपद खीरी, प्रयागराज, जौनपुर, वाराणसी, मिर्जापुर, बलरामपुर, कानपुर देहात, कानपुर नगर और सोनभद्र में क्लस्टर मॉडल के अंतर्गत आवास निर्माण कराए गए हैं, जिससे एक साथ कई परिवारों को बेहतर आवासीय सुविधाएं उपलब्ध हो सकी हैं।योजना के तहत वर्ष 2024-25 तक अनेक प्राथमिकता वाले वर्गों को विशेष रूप से आवास उपलब्ध कराए गए हैं। इनमें मुसहर वर्ग के 50,037 परिवार, वनटांगिया समुदाय के 5,324 परिवार, कुष्ठ रोग से प्रभावित 5,410 परिवार, दैवीय आपदा से प्रभावित 93,300 परिवार, कालाजार से प्रभावित 254 परिवार, जेई/एईएस से प्रभावित 684 परिवार, थारू जाति के 3,332 परिवार, कोल समुदाय के 29,923 परिवार, सहरिया समुदाय के 7,385 परिवार, चेरो समुदाय के 5,773 परिवार, बैगा समुदाय के 1,973 परिवार, नट समुदाय के 2,798 परिवार, दिव्यांगजन के 91,062 परिवार, बंजारा समुदाय के 5,096 परिवार तथा 18 से 40 वर्ष आयु वर्ग की 41,854 निराश्रित विधवा महिलाओं को आवास का लाभ दिया गया है।मुख्यमंत्री आवास योजना–ग्रामीण एक पूर्णतः राज्य सहायतित योजना है, जिसकी शुरुआत फरवरी 2018 में की गई थी। इस योजना का उद्देश्य प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित परिवारों, कालाजार, कुष्ठ रोग, जेई/एईएस जैसी बीमारियों से प्रभावित व्यक्तियों, वनटांगिया, मुसहर, नट, चेरो, सहरिया, थारू, कोल, बैगा, बंजारा, पछड़िया, गढ़इया लोहार, बांसफोड़, बसोड़, धरकार जैसे वंचित समुदायों, दिव्यांगजनों तथा पति की मृत्यु के बाद निराश्रित हुई महिलाओं को सुरक्षित और सम्मानजनक आवास उपलब्ध कराना है।

कौशांबी में आकार ले रहा अंतरराष्ट्रीय स्तर का बुद्ध थीम पार्क, आध्यात्मिक पर्यटन को मिलेगी नई पहचान

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। कौशांबी की ऐतिहासिक और आध्यात्मिक पहचान को नई ऊंचाई देने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग एक महत्वाकांक्षी परियोजना को तेजी से मूर्त रूप दे रहा है। कोसम इनाम गांव में निर्माणाधीन बुद्ध थीम पार्क को युद्धस्तर पर विकसित किया जा रहा है, जहां भगवान बुद्ध के जीवन, दर्शन और करुणा के संदेश को कलात्मक मूर्तियों और संरचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जाएगा। लगभग 11 हेक्टेयर क्षेत्र में विकसित हो रहा यह थीम पार्क 22.93 करोड़ रुपए की लागत से तैयार किया जा रहा है, जिसे मौजूदा वर्ष के अंत तक पूर्ण करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। यह जानकारी प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने दी।पर्यटन मंत्री ने बताया कि सरकार की परिकल्पना के अनुरूप इस बुद्ध थीम पार्क को देश-विदेश से आने वाले बौद्ध अनुयायियों और पर्यटकों के लिए एक विशिष्ट आध्यात्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। यह परियोजना न केवल कौशांबी को वैश्विक बौद्ध पर्यटन सर्किट में सशक्त स्थान दिलाएगी, बल्कि क्षेत्रीय पर्यटन को बढ़ावा देने के साथ-साथ रोजगार के नए अवसर सृजित करेगी और स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान करेगी।कौशांबी में निर्माणाधीन बुद्ध थीम पार्क को तेलंगाना के नागार्जुन सागर स्थित प्रसिद्ध बुद्धवनम की तर्ज पर विकसित किया जा रहा है। इस परिसर में ध्यान और सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़ी अनेक सुविधाएं प्रस्तावित हैं। पार्क के अंतर्गत विभिन्न मुद्राओं—धर्मचक्र मुद्रा, अभय मुद्रा और भूमिस्पर्श मुद्रा—पर आधारित एक विशेष ध्यान केंद्र स्थापित किया जाएगा।

ग्रामीण भारत के सशक्तिकरण की दिशा में ऐतिहासिक कदम है विकसित भारत जी–राम–जी अधिनियम : ए .के . शर्मा

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री तथा जनपद भदोही के प्रभारी मंत्री ए.के. शर्मा ने कलेक्ट्रेट सभागार में विकसित भारत रोजगार एवं आजीविका मिशन (ग्रामीण) — विकसित भारत जी-राम-जी अधिनियम को लेकर आयोजित प्रेस वार्ता को संबोधित किया। उन्होंने इस नए अधिनियम को ग्रामीण भारत के सशक्तिकरण की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल बताते हुए कहा कि इससे ग्रामीण श्रमिकों, किसानों और मेहनतकश वर्ग के जीवन में व्यापक और सकारात्मक परिवर्तन आएगा।प्रेस वार्ता में ए.के. शर्मा ने बताया कि इस अधिनियम के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की गारंटी को 100 दिनों से बढ़ाकर 125 दिन कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि यह निर्णय ग्रामीण परिवारों की आय बढ़ाने, पलायन रोकने और स्थायी आजीविका के अवसर उपलब्ध कराने में मील का पत्थर साबित होगा। यह कदम सरकार की ग्रामीण समाज के प्रति संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

मंत्री ने कहा कि विकसित भारत जी-राम-जी अधिनियम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि बेरोजगारी भत्ता अब केवल कागजी प्रावधान न रहकर एक वास्तविक और प्रभावी कानूनी अधिकार बन गया है। पूर्ववर्ती महात्मा गांधी नरेगा अधिनियम में अनेक शर्तों और जटिलताओं के कारण बेरोजगारी भत्ता मिल पाना लगभग असंभव था, जबकि नए अधिनियम में सभी अनावश्यक प्रतिबंध हटा दिए गए हैं। अब यदि किसी श्रमिक द्वारा कार्य की मांग किए जाने के बाद निर्धारित समय के भीतर रोजगार उपलब्ध नहीं कराया जाता है, तो बेरोजगारी भत्ता स्वतः देय होगा।उन्होंने यह भी बताया कि मजदूरी भुगतान की व्यवस्था को पूरी तरह पारदर्शी और समयबद्ध बनाया गया है। यदि किसी कारणवश मजदूरी के भुगतान में विलंब होता है, तो प्रत्येक विलंबित दिन का मुआवजा मजदूरी के साथ श्रमिक को दिया जाएगा। इससे श्रमिकों के शोषण पर रोक लगेगी और उन्हें उनके परिश्रम का पूरा लाभ समय पर मिल सकेगा।

पेट्रोल पंपों पर लखनऊ पुलिस का सघन चेकिंग अभियान

लखनऊ। जनपद में कानून-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखने, अपराधों पर प्रभावी नियंत्रण तथा यातायात नियमों के कड़ाई से अनुपालन को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से लखनऊ पुलिस द्वारा पेट्रोल पंपों एवं उनके आसपास संदिग्ध गतिविधियों पर नियंत्रण हेतु विशेष सघन चेकिंग एवं निगरानी अभियान चलाया गया। यह अभियान शासन द्वारा संचालित "नो हेलमेट–नो पेट्रोल" अभियान के अंतर्गत दोपहिया वाहन चालकों में हेलमेट की अनिवार्यता सुनिश्चित करने और संदिग्ध व्यक्तियों की पहचान के उद्देश्य से संचालित किया गया।पुलिस आयुक्त अमरेंद्र कुमार सेंगर के निर्देशन एवं संयुक्त पुलिस आयुक्त (कानून एवं व्यवस्था) के पर्यवेक्षण में कमिश्नरेट लखनऊ द्वारा दिनांक 08 जनवरी 2026 को जनपद के समस्त जोनों और थाना क्षेत्रों में स्थित पेट्रोल पंपों तथा उनके आसपास यह विशेष अभियान चलाया गया।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार के विरोध में 11 जनवरी को यूपी भर में आम आदमी पार्टी का प्रदर्शन

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों पर हो रहे लगातार अत्याचार के विरोध में आम आदमी पार्टी उत्तर प्रदेश 11 जनवरी को प्रदेश के सभी जिलों में जोरदार प्रदर्शन करेगी। इस दौरान महामहिम राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की चुप्पी के खिलाफ कड़ा विरोध दर्ज कराया जाएगा। यह जानकारी आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद एवं उत्तर प्रदेश प्रभारी संजय सिंह ने शुक्रवार को जारी बयान में दी।संजय सिंह ने कहा कि बांग्लादेश में हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों पर हो रहे जुल्म को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश की धरती से केंद्र सरकार को यह साफ संदेश दिया जाएगा कि इस गंभीर मुद्दे पर प्रधानमंत्री की चुप्पी अब स्वीकार्य नहीं है। उन्होंने सवाल उठाया कि आखिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अब तक बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार पर मौन क्यों हैं।संजय सिंह ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री की चुप्पी के पीछे बड़े कारोबारी हित जुड़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि झारखंड में उत्पादित बिजली बांग्लादेश को सप्लाई की जा रही है और अदानी समूह का वहां हजारों करोड़ रुपये का कारोबार चल रहा है। यदि प्रधानमंत्री इस मुद्दे पर बोलते हैं तो उनके करीबी मित्रों के व्यापार पर असर पड़ेगा, इसी कारण सरकार चुप्पी साधे हुए है। उन्होंने दो टूक कहा कि यह रवैया नहीं चलेगा।उन्होंने आगे कहा कि एक ओर बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार हो रहे हैं और दूसरी ओर भारत से बांग्लादेश को बिजली, डीजल और अन्य संसाधन दिए जा रहे हैं तथा हजारों करोड़ रुपये का व्यापार जारी है। यह सरकार के दोहरे चरित्र को उजागर करता है। संजय सिंह ने कहा कि देश की जनता के सामने यह सच्चाई आनी चाहिए और प्रधानमंत्री को देशवासियों की भावनाओं का सम्मान करते हुए बांग्लादेश में हो रहे अत्याचार पर खुलकर बोलना होगा।भाजपा पर हमला बोलते हुए संजय सिंह ने कहा कि पार्टी एक तरफ राष्ट्रवाद और हिंदुओं की सुरक्षा की बड़ी-बड़ी बातें करती है, जबकि दूसरी तरफ बांग्लादेश के साथ व्यापार बढ़ाया जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि लगभग एक लाख करोड़ रुपये का व्यापार मोदी सरकार और उससे जुड़े व्यापारी बांग्लादेश के साथ कर रहे हैं, यही वजह है कि सरकार की अंतरात्मा मर चुकी है और प्रधानमंत्री मौन हैं।संजय सिंह ने कहा कि इन सभी मांगों को लेकर 11 जनवरी को आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता पूरे उत्तर प्रदेश में सड़कों पर उतरेंगे, जिला स्तर पर प्रदर्शन करेंगे और राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपेंगे। साथ ही मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी आवाज को मजबूती से उठाया जाएगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ अब चुप्पी नहीं चलेगी और केंद्र सरकार को इसका जवाब देना ही होगा।

मिशन शक्ति के तहत महिला हेल्प डेस्क कर्मियों का विशेष प्रशिक्षण, संवेदनशील और प्रभावी पुलिसिंग पर जोर

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। महिला सुरक्षा को और अधिक प्रभावी, संवेदनशील और परिणामोन्मुखी बनाने की दिशा में पुलिस कमिश्नरेट लखनऊ द्वारा एक महत्वपूर्ण पहल की गई। पुलिस आयुक्त अमरेन्द्र कुमार सेंगर के निर्देशन में मिशन शक्ति अभियान के अंतर्गत महिला हेल्प डेस्क कर्मियों के लिए एक दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 9 जनवरी 2026 को डालीगंज स्थित कमिश्नरेट कार्यालय में किया गया।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम संयुक्त पुलिस आयुक्त अपराध एवं मुख्यालय अपर्णा कुमार के मार्गदर्शन में, पुलिस उपायुक्त महिला अपराध एवं सुरक्षा ममता रानी चौधरी के नेतृत्व तथा सहायक पुलिस आयुक्त महिला अपराध सौम्या पाण्डेय के पर्यवेक्षण में संपन्न हुआ।प्रशिक्षण कार्यक्रम दो चरणों में आयोजित किया गया। पहला सत्र प्रातः 11 बजे से दोपहर 12:30 बजे तक तथा दूसरा सत्र दोपहर 1 बजे से अपराह्न 2:30 बजे तक चला। इसमें लखनऊ कमिश्नरेट के सभी थानों से 100 से अधिक महिला हेल्प डेस्क कर्मियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य महिला पीड़िताओं को अधिक संवेदनशील, भरोसेमंद और प्रभावी सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए कर्मियों के कानूनी ज्ञान, व्यवहारिक कौशल और मनोवैज्ञानिक समझ को सुदृढ़ करना रहा।प्रशिक्षण के दौरान महिला सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण कानूनी प्रावधानों पर विस्तार से चर्चा की गई। इसमें दहेज से संबंधित अपराध, पति द्वारा क्रूरता, यौन उत्पीड़न, भारतीय न्याय संहिता के प्रासंगिक प्रावधानों तथा पॉक्सो अधिनियम की जानकारी दी गई। साथ ही शिकायत दर्ज करने की संवेदनशील प्रक्रिया, पीड़िता से संवाद स्थापित करने की कला, विश्वास अर्जित करने, एफआईआर अथवा एनसीआर दर्ज करते समय सावधानियों और आपातकालीन सहायता प्रक्रिया पर विशेष बल दिया गया।मनोवैज्ञानिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षण में आघात से गुजर रही महिला पीड़िताओं को मनोवैज्ञानिक प्राथमिक चिकित्सा प्रदान करने के तरीकों की भी जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त महिला कल्याण विभाग, चाइल्डलाइन, वन-स्टॉप सेंटर सखी, विधिक सेवा प्राधिकरण जैसे संस्थानों के साथ बेहतर समन्वय स्थापित करने की प्रक्रिया पर चर्चा की गई, ताकि पीड़िताओं को त्वरित और समग्र सहायता मिल सके। तकनीकी दृष्टि से कर्मियों को हेल्पलाइन सॉफ्टवेयर, शिकायत ट्रैकिंग सिस्टम और सोशल मीडिया के सकारात्मक एवं जिम्मेदार उपयोग के बारे में भी प्रशिक्षित किया गया। महिला हेल्प डेस्क पर प्राप्त शिकायतों के सुव्यवस्थित डाटा प्रबंधन और नियमित रिपोर्टिंग को भी प्रशिक्षण का अहम हिस्सा बनाया गया।वरिष्ठ अधिकारियों ने महिला हेल्प डेस्क कर्मियों को यह संदेश दिया कि उनकी भूमिका केवल एक शिकायत दर्ज करने तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्हें पीड़ित महिलाओं के लिए मित्र, मार्गदर्शक और सहायक की भूमिका निभानी है। अधिकारियों ने कहा कि महिला हेल्प डेस्क महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और न्याय की आशा का प्रतीक हैं और इन्हें पूरी संवेदनशीलता और जिम्मेदारी के साथ संचालित किया जाना चाहिए।लखनऊ पुलिस ने स्पष्ट किया कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम नियमित अंतराल पर आयोजित किए जाएंगे। इसके साथ ही इस वर्ष प्रत्येक थाने की महिला हेल्प डेस्क की कार्यप्रणाली का ऑडिट और निगरानी के लिए एक मजबूत प्रणाली विकसित की जाएगी, जिससे सेवाओं की गुणवत्ता और जवाबदेही सुनिश्चित की जा सके।

मिशन शक्ति 5.0 के तहत डालीगंज क्रॉसिंग पर महिला सुरक्षा को लेकर व्यापक जागरूकता अभियान

लखनऊ। महिला सुरक्षा, सम्मान और अधिकारों को सशक्त बनाने की दिशा में मिशन शक्ति 5.0 अभियान के तहत पुलिस कमिश्नरेट लखनऊ द्वारा लगातार जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में आज 9 जनवरी 2026 को थाना मदेयगंज की पुलिस टीम द्वारा डालीगंज क्रॉसिंग पर महिला अपराधों की रोकथाम और महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से एक विशेष अभियान चलाया गया।इस दौरान थाना मदेयगंज की टीम ने राहगीरों, महिलाओं, छात्राओं और बच्चों को मिशन शक्ति के उद्देश्यों की जानकारी दी तथा महिला सुरक्षा से जुड़ी विभिन्न सरकारी व्यवस्थाओं और सहायता प्रणालियों के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम के अंतर्गत एंटी रोमियो टीम, पिंक बूथ, पिंक मोबाइल और महिला शक्ति केंद्र की भूमिका को समझाते हुए पम्पलेट वितरित किए गए,।

सुशांत गोल्फ सिटी में युवक का जला हुआ शव मिलने से हड़कंप, कहीं और हत्या कर शव ठिकाने लगाने की आशंका

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। राजधानी के थाना सुशांत गोल्फ सिटी क्षेत्र अंतर्गत अलखनंदा चौकी इलाके में आज 9 जनवरी 2026 को एक सनसनीखेज घटना सामने आई, जब भागीरथी एनक्लेव की चारदीवारी के बाहर सड़क किनारे एक अज्ञात युवक का शव मिलने की सूचना पुलिस को प्राप्त हुई। सूचना मिलते ही थाना सुशांत गोल्फ सिटी की पुलिस टीम तत्काल मौके पर पहुंची और घटनास्थल की घेराबंदी कर जांच शुरू की गई।पुलिस जांच में सामने आया कि भागीरथी एनक्लेव अंसल की चारदीवारी के बगल स्थित झाड़ियों के पास सड़क किनारे एक अज्ञात युवक का शव पड़ा हुआ था। मृतक की उम्र लगभग 20 से 25 वर्ष के बीच आंकी जा रही है। शव की स्थिति को देखते हुए प्रथमदृष्टया यह आशंका जताई जा रही है कि युवक की हत्या किसी अन्य स्थान पर की गई और उसके बाद शव को चादर में बांधकर यहां लाया गया। पहचान छिपाने के उद्देश्य से शव को झाड़ियों में आग लगाकर जलाने का प्रयास भी किया गया, हालांकि वह पूरी तरह सफल नहीं हो सका।घटना की गंभीरता को देखते हुए मौके पर फील्ड यूनिट और फोरेंसिक टीम को बुलाया गया, जिन्होंने घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण कर महत्वपूर्ण साक्ष्य एकत्र किए। आसपास के क्षेत्र में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है तथा अन्य तकनीकी और स्थानीय माध्यमों से संदिग्ध अभियुक्तों की तलाश तेज कर दी गई है। मामले के शीघ्र अनावरण के लिए पुलिस द्वारा कुल चार विशेष टीमों का गठन किया गया है, जिन्हें अलग-अलग दिशाओं में जांच की जिम्मेदारी सौंपी गई है। पुलिस यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि मृतक कौन है।

कार्तिगई दीपम विवाद पर मद्रास हाईकोर्ट का फैसला सनातन विरोधियों की करारी हार है

मद्रास हाईकोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसले में तिरुप्परनकुंद्रम पहाड़ी के दीपथून पर कार्तिगई दीपम जलाने की अनुमति को बरकरार रखा है। अदालत ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यह परंपरा सदियों पुरानी है और इसे रोकने का कोई संवैधानिक या कानूनी आधार नहीं है। अदालत ने साथ ही राज्य सरकार द्वारा कानून व्यवस्था के नाम पर लगाए गए प्रतिबंधों को निराधार और कल्पनाजन्य करार दिया। न्यायालय ने कहा कि जिस स्थान पर दीपम जलाया जाता है वह मंदिर से जुड़ी पारंपरिक धार्मिक व्यवस्था का हिस्सा रहा है। केवल आशंका के आधार पर किसी धार्मिक परंपरा को रोका नहीं जा सकता। अदालत ने यह भी रेखांकित किया कि धार्मिक स्वतंत्रता केवल निजी पूजा तक सीमित नहीं है बल्कि सामूहिक और सार्वजनिक धार्मिक अभिव्यक्तियां भी इसके अंतर्गत आती हैं। हम आपको बता दें कि इस मामले में राज्य सरकार ने दलील दी थी कि दीपम जलाने से सामाजिक तनाव और कानून व्यवस्था की समस्या उत्पन्न हो सकती है। कोर्ट ने इस तर्क को सिरे से खारिज करते हुए कहा कि प्रशासन का दायित्व भय पैदा करना नहीं बल्कि निष्पक्ष और साहसिक ढंग से कानून व्यवस्था बनाए रखना है। अदालत ने यह भी कहा कि यदि हर परंपरा को संभावित विवाद के नाम पर रोक दिया जाए तो संविधान में प्रदत्त धार्मिक स्वतंत्रता केवल कागज पर रह जाएगी। हम आपको बता दें कि याचिकाकर्ताओं की ओर से यह तर्क रखा गया था कि कार्तिगई दीपम केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। इसे रोकने का प्रयास समाज में अनावश्यक विभाजन और असंतोष को जन्म देता है। कोर्ट ने इस तर्क से सहमति जताई और आदेश दिया कि परंपरागत रीति से दीपम जलाने की अनुमति दी जाए। देखा जाये तो मद्रास हाईकोर्ट का यह निर्णय उस मानसिकता पर करारा प्रहार है जो हर हिंदू परंपरा को कानून व्यवस्था के नाम पर कटघरे में खड़ा करने की आदी हो चुकी है। आज सवाल यह नहीं है कि दीपम जलेगा या नहीं। सवाल यह है कि क्या बहुसंख्यक समाज की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को हर बार डर और शक के चश्मे से देखा जाएगा? तमिलनाडु की द्रमुक सरकार का तर्क कि दीपम जलाने से अशांति फैल सकती है, दरअसल प्रशासनिक असफलता को छिपाने का तरीका है। अगर हर धार्मिक आयोजन से पहले सरकार को डर लगने लगे तो फिर शासन चलाने का नैतिक अधिकार किस बात का रह जाता है? अदालत ने ठीक ही कहा कि कल्पित भय के आधार पर मौलिक अधिकारों को कुचला नहीं जा सकता।

देखा जाये तो यह मामला उस व्यापक प्रवृत्ति का हिस्सा है जहां हिंदू धार्मिक परंपराओं को बार बार रोकने और सीमित करने का प्रयास किया जाता है। कभी शोर का बहाना बनाया जाता है, कभी पर्यावरण का तो कभी कानून व्यवस्था का। लेकिन आश्चर्यजनक रूप से यही तर्क अन्य समुदायों के मामलों में अचानक गायब हो जाते हैं। यह दोहरा मापदंड समाज में असंतोष और अविश्वास को जन्म देता है। कार्तिगई दीपम का सामाजिक महत्व केवल आस्था तक सीमित नहीं है। यह पर्व सामूहिकता का प्रतीक है। पहाड़ी पर जलता दीप दूर दूर तक दिखाई देता है और समाज को जोड़ने का काम करता है। जब ऐसी परंपराओं को रोका जाता है तो संदेश जाता है कि बहुसंख्यक समाज की भावनाएं गौण हैं। यही भावना धीरे धीरे आक्रोश में बदलती है और फिर वही आक्रोश सामाजिक तनाव का रूप ले लेता है। इस फैसले का सबसे बड़ा सामाजिक प्रभाव यह है कि लोगों का यह विश्वास और प्रबल हुआ है कि न्यायपालिका संविधान की आत्मा को समझती है। अदालत के आदेश ने यह स्पष्ट कर दिया कि धर्मनिरपेक्षता का अर्थ यह नहीं है कि राज्य केवल एक धर्म के प्रति कठोर हो जाए और बाकी के प्रति नरम। सच्ची धर्मनिरपेक्षता सभी परंपराओं के साथ समान व्यवहार की मांग करती है। यह निर्णय प्रशासन के लिए भी चेतावनी है। उसे समझना होगा कि परंपराओं को दबाने से शांति नहीं आती बल्कि असंतोष भीतर ही भीतर सुलगता रहता है। बहरहाल, अगर आज अदालत ने दीपम जलाने के अधिकार की रक्षा नहीं की होती तो कल कोई और परंपरा इसी तरह प्रतिबंधों की भेंट चढ़ जाती। वैसे यह फैसला केवल एक धार्मिक जीत नहीं है। यह सांस्कृतिक आत्मसम्मान की पुनर्स्थापना है। यह संदेश है कि डर के नाम पर अधिकार छीने नहीं जा सकते। यह आदेश यह भी संदेश देता है कि अगर समाज चुप रहा तो उसकी परंपराएं एक एक कर खत्म कर दी जाएंगी। दीप तो अब जल जायेगा लेकिन समाज की चेतना की लौ भी जलती रहनी चाहिए क्योंकि संभव है राह में रोड़े अटकाने वाले दूसरा प्रतिबंध लगाने के लिए तैयार बैठे हों।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्षों की कहानी

'तत्वमसि' में है प्रचारकों की जिंदगी का बयान

प्रो. (डा.) संजय द्विवेदी

हम जानते हैं कि श्रीधर पराड़कर, संघ प्रेरित अखिल भारतीय साहित्य परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री रहे हैं और लंबे समय से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं।

देश में हुए सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति सामान्यजन की जिज्ञासा बढ़ा दी है। इस बीच अपनी यात्रा के 100 साल संघ ने पूरे कर लिए हैं। इसलिए संघ की संपर्क गतिविधियां भी सामान्य दिनों से ज्यादा हैं। ऐसे समय में संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्रीधर पराड़कर का उपन्यास 'तत्वमसि' बड़ी सरलता से आरएसएस के बारे में बताता है। यह उपन्यास एक आत्मकथात्मक उपन्यास भी कहा जा रहा है, जिसके केंद्र में खुद लेखक और उसके अनुभव हैं। बावजूद इसके एक प्रचारक की जिंदगी के बहाने संघ को समझाने में यह उपन्यास पूरी तरह सफल है।

कहानियों से चीजों को बताना आसान होता है, विचार कई बार भ्रमित भी करते हैं और उन्हें समझना सबके बस की बात नहीं। उसे वही ग्रहण कर सकता है जिसकी उस विचार विशेष में रुचि हो। शायद इसीलिए पूज्य सरसंघचालक डा. मोहन भागवत इस बात को रेखांकित करते रहे हैं कि "संघ को संघ के भीतर आकर ही समझा जा सकता है।" अपनी स्थापना के समय से ही संघ कुछ शक्तियों के निशाने पर रहा है। खासकर आजाद भारत में उसे इसके दंश कई बार भोगने पड़े। श्रीधर पराड़कर का यह उपन्यास उनके अर्जित अनुभवों का बयान भी है। इसलिए इस कृति की विश्वसनीयता बढ़ जाती है। सही मायनों में यह भोगा हुआ सत्य है, जिसकी अनुभूति इसे पढ़ते समय सहज ही होती है।

हम जानते हैं कि श्रीधर पराड़कर, संघ प्रेरित अखिल भारतीय साहित्य परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री रहे हैं और लंबे समय से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। एक लेखक,चिंतक,विचारक और संगठनकर्ता के नाते वे राष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिलब्ध हैं। ऐसे सरोकारी व्यक्ति का लेखन निश्चित ही बहुत सारे सवालों के जवाब लेकर आता है। किसी भी उपन्यास या कहानी की सबसे बड़ी सफलता है उसकी रोचकता। कहानी को सुनने-पढ़ने का मन होना। कथारस में बहते चले जाना। विचार और संगठन जैसी बोझिल समझी जाने वाली कथा को भी पराड़करजी ने जिस अंदाज में व्यक्त किया है उसने पुस्तक की पठनीयता बनाए रखी है। यह किताब न सिर्फ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचार तत्व, प्रचारकों की जीवन शैली, संघ के समावेशी चरित्र का बयान करती है बल्कि किस तरह वह समाज परिवर्तन को व्यक्ति परिवर्तन के माध्यम से संभव कर रहा है इसे भी बताती है।

उपन्यास के मुख्य पात्र परितोष बाबू संघ के प्रचारक हैं। प्रचारक परंपरा के बारे में समाज में न्यूनतम जानकारियां हैं। इस किताब में 'प्रचारक परंपरा' जो सामान्य वस्त्रों में रहकर भी 'साधु परंपरा' का पालन करती है का विषद वर्णन है। समाज जीवन में काम करते हुए आने वाली कठिनाइयों से लेकर,समाज के प्रश्नों का उत्तर भी प्रचारक खोजते हैं। भाषा की रवानी और कथा शैली ऐसी कि संगठन शास्त्र जैसे विषयों को किस्सागोई के साथ कहने में लेखक सफल रहे हैं। पत्रकार अनंत विजय ने किताब के फ्लैप पर ठीक ही लिखा है कि-"मेरे जानते हिंदी के किसी लेखक ने किसी संगठन को केंद्र में रखकर इस तरह का उपन्यास नहीं लिखा है। यह अभिनव प्रयोग है, जिसके मोहजाल में पाठक का पड़ना तय है।"

पुस्तक के आरंभ में ही अपनी रेलयात्रा के माध्यम से परितोष बाबू न सिर्फ अपना स्वभाव,विचार रख देते हैं बल्कि समाज को लेकर अपनी सोच को भी प्रकट करते हैं। पहले दृश्य से बांध लेना इसे ही कहते हैं। यह उपन्यास एक कर्मनिष्ठ प्रचारक की जिंदगी से गुजरते हुए समाज के अनेक प्रश्नों के उत्तर भी देता चलता है। इसमें जो पात्र हैं वे बहुत सुनियोजित तरीके से कथा के उद्देश्य को पूरा करने में सहयोग करते हैं। विभिन्न पंथों और विचारों से जुड़े पात्रों का संवाद भी परितोष बाबू से होता है। यहां यह भी प्रकट होता है कि वे व्यक्ति से व्यक्ति का संवाद पसंद करते हैं। मुस्लिम युवा अफरोज से संवाद का अवसर आता है तो वे अपने सहयोगी से कहते हैं,-" उन्हें बुलाना नहीं हम उनसे मिलने उनके घर जाएंगें।" इससे पता चलता है कि संघ की कार्यपद्धति क्या है। जहां वह व्यक्ति से नहीं बल्कि परिवार से जुड़ता है ताकि उनसे सच्चा जुड़ाव हो सके। उनके सुख-दुख अपने हो जाएं।

यह उपन्यास इस अर्थ में विशिष्ठ है कि यह अपने समय और उसके सवालों से जूझता है। उसके ठोस और वाजिब हल खोजने की कोशिशें भी करता है। संवाद के माध्यम से यह उपन्यास जो कहता है उसे बहुत बड़े वक्तव्यों से नहीं समझाया जा सकता। प्रो. संजय कपूर, विदेशी मूल की युवती नोरा, महेश बाबू, अफरोज,सदानंद, अनिता और स्नेहल जैसे पात्रों के बहाने जो ताना-बाना बुना गया है वह अप्रतिम है। सदानंद,अमित और स्नेहल से हुए संवाद में परितोष बाबू जिस तरह संघ से जुड़े सवालों के उत्तर देते हैं,वैसे ही वे समाज और परिवार के मुद्दों पर राय रखते हैं। वे एक ऐसे बुजुर्ग की तरह पेश आते हैं जिस पर सबकी आस्था है। भारतीय परिवारों में बुजुर्गों की भूमिका क्या होनी चाहिए, क्या है इसे भी परितोष बाबू की छवि में देखा जा सकता है। परितोष बाबू जैसे लोग जिन्होंने अपना परिवार नहीं बनाया, उसकी मनोभूमि कैसे तैयार होती है। कैसे वे सब कुछ त्यागकर अपने समाज और देश की बेहतरी के स्वयं को आत्मार्पित कर देते हैं। यह सीखने वाली बात है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में बहुत से बने हुए भ्रमों, दुष्प्रचारों को यह उपन्यास एक जवाब है। भगवा ध्वज को गुरू मानना और सरसंघचालक परंपरा जैसे विषय भी सहज संवाद से सरल लगने लगते हैं।

समकालीन कथासाहित्य में प्रायः एक ही तरह की कहानियां और उपन्यास पढ़कर जिस तरह के मनोविकार और अवसाद उपजते हैं, उसके बीच में यह उपन्यास एक ठंडी हवा के झोंके की तरह है। यह पाठकों को एक संगठन और उसके प्रचारक की कथा तो सुनाता ही है, नए भारत के निर्माण में जुटे राष्ट्रप्रेमियों से भी परिचित कराता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) भारतीय समाज के पुनर्गठन की वह प्रयोगशाला है, जो विचार, सेवा और अनुशासन के आधार पर एक सांस्कृतिक राष्ट्र का निर्माण कर रही है। 1925 में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार की अनोखी भारतीय दृष्टि से उपजा यह संगठन आज अपनी शताब्दी मना रहा है। यह केवल संगठन विस्तार की नहीं, बल्कि भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक पुनरुत्थान की एक अनवरत यात्रा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को सही निगाहों से देखना और उसका उचित मूल्यांकन किया जाना अभी शेष है, यह उपन्यास उस दिशा में एक सार्थक प्रयास है।

(लेखक भारतीय जन संचार संस्थान (आईआईएमसी), नई दिल्ली के पूर्व महानिदेशक हैं और संप्रति माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल में जनसंचार विभाग के अध्यक्ष हैं।)

टिप्पणी

नाकामियों ने उपजी हताशा

कांग्रेस की मुश्किल यह है कि गुजरे 12 साल में वह नरेंद्र मोदी के उछाले मुद्दों पर प्रतिक्रिया जताने से आगे का कोई कार्यक्रम तय नहीं कर पाई है। उधर बार-बार चुनावी हार से संगठन में हताशा गहरा गई है।

दिग्विजय सिंह ने कांग्रेस की संगठन संबंधी मूलभूत समस्या की ओर इशारा किया, लेकिन इसके लिए उन्होंने संभवतः अनुचित प्रतीक चुना। जिस दल (भाजपा) या संगठन (आरएसएस) को कांग्रेस अपना वैचारिक विरोधी मानती हो, उसकी खूबी का सार्वजनिक बखान करना पार्टी में हलचल को आमंत्रित करना ही था। बहरहाल, वरिष्ठ कांग्रेस नेता शशि थरूर यही काम साल भर से ज्यादा समय से कर रहे हैं। एक मौके पर तो वे यह कह गए कि भारत का सौभाग्य है कि नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने यूक्रेन युद्ध पर तटस्थता की नीति अपना कर देश हित की रक्षा कर ली। इसके बावजूद कांग्रेस ने उन्हें बदार्श्त कर रखा है।

जब कभी ये सवाल पार्टी प्रवक्ताओं के सामने आया, तो उनकी दलील थी कि कांग्रेस के अंदर लोकतंत्र है, जहां असहमति जताने की आजादी है। अब यह लोकतंत्र है या अराजकता- इस सवाल को खुद पार्टी नेतृत्व के लिए छोड़ दिया जाए, तब भी यह मूलभूत प्रश्न रह जाता है कि क्या ऐसे भटकाव से ग्रस्त दल कोई सार्थक विकल्प प्रदान कर सकता है? कांग्रेस की मुश्किल यह है कि 12 साल से विपक्ष में रहने के बावजूद वह नरेंद्र मोदी और भाजपा के उछाले मुद्दों पर प्रतिक्रिया जताने से आगे का कोई एजेंडा या कार्यक्रम तय नहीं कर पाई है। उधर बार-बार चुनावी हार से संगठन में हताशा गहराती चली गई है।

संगठन में विभ्रम का हाल यह है कि कर्नाटक में नेतृत्व परिवर्तन के प्रश्न पर पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे कहते सुने गए कि इस बारे में 'आलाकमान फैसला लेगा'। इस तरह उन्होंने साफ किया है कि वे 'आलाकमान' नहीं हैं। उनके अध्यक्ष होने के बावजूद यह हैसियत गांधी परिवार के सदस्यों की ही है। आज इस परिवार के सबसे अग्रणी चेहरा राहुल गांधी हैं, जिन्होंने भविष्य का सपना जगाने के बजाय जातीय पहचान की पुरानी पड़ चुकी राजनीति से पार्टी के पुनरुथ्थान की आस जोड़ी और जब इसमें कामयाबी नहीं मिली, तो 'वोट चोरी' के कथानक में सिमट गए हैं। इन हालात में हताश नेताओं को प्रतिद्वंद्वी पार्टी में गुण नजर आने लगे हैं, तो उसमें कोई अचरज नहीं है।

ब्लॉग

क्या रूसी लोग युद्धखोर हैं?

शंकर शरण

रूसी इतिहास में युद्ध सदियों से बार-बार की परिघटना है। अमेरिकी इतिहासकार प्रो. ग्रेगोरी कार्लटन ने अपनी पुस्तक 'रसियाः द स्टोरी ऑफ वार' (2017) में रूसी इतिहास का एक रोचक आकलन किया है। ज ऐतिहासिक रूप से रूसियों के लिए युद्ध उन के अस्तित्व का सामान्य अंग रहा है। रूसी सैन्य अकादमी के प्रमुख रहे निकोलाई सुखोतिन ने उन्नीसवीं सदी के अंत में हिसाब लगाकर बताया था कि उस से पिछली पाँच सदियों में रूस का लगभग दो तिहाई समय युद्ध लड़ते बीता है। उस के बाद, आगे बीसवीं सदी का हिसाब तो ऊपर देख ही चुके हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने रूस-उक्रेन युद्ध के जल्द ही खत्म होने का दावा किया है। पर रूसी राष्ट्रपति पूतिन जल्दी में नहीं लगते। न ही उक्रेनी राष्ट्रपति जेलेन्स्की बहुत अधीर लगते हैं। इसीलिए कूटनीतिक बात-चीत में प्रगति जरूर हो रही है, पर ट्रंप का दावा अधिक विश्वसनीय नहीं लगता। इसलिए भी, कि कुछ ही पहले ट्रंप ने रूसी राष्ट्रपति पूतिन को 'पागल कहा था। क्योंकि उन्होंने फटाफट ट्रंप की बात मान उक्रेन से युद्ध खत्म नहीं किया। पर ट्रंप रूसियों का चरित्र नहीं जानते। वे रूस के इतिहास से भी अनजान लगते हैं। यह कुछ स्वाभाविक भी है। अमेरिकियों द्वारा युद्ध को अपवाद, असहज घटना सा लिया जाता है। संभवतः कारण यह भी हो कि संयुक्त राज्य अमेरिका ने कभी विदेशी कब्जा नहीं झेला है। द्वितीय विश्व युद्ध और वियतनाम, दोनों में मिलाकर भी कुल पाँच लाख अमेरिकी सैनिक मारे गये। लेकिन उसी से अमेरिकी काफी खिन्न हुए थे। आज तक उस की मनोवैज्ञानिक स्मृति वहाँ की रचनाओं में आती रहती है।

परन्तु रूसी इतिहास में युद्ध सदियों से बार-बार की परिघटना है। अमेरिकी इतिहासकार प्रो. ग्रेगोरी कार्लटन ने अपनी पुस्तक 'रसियाः द स्टोरी ऑफ वार (2017) में रूसी इतिहास का एक रोचक आकलन किया है। उस से पता चलता है अब तक रुसियों ने अनेक ऐसे युद्ध झेले जो मानो रूसियों को समूल खत्म कर देने लिए हुए थे। केवल द्वितीय विश्व युद्ध में ही 2 करोड़ से अधिक रूसी मारे गये थे, जबकि पूरे देश की आबादी 17 करोड़ थी। हिटलर ने सचमुच रूसियों के खात्मे के लिए ही लेनिनग्राद पर घेरा डाला था। वह लेनिनग्राद पर कब्जा कर सकता था, परन्तु उस ने सितंबर 1941 से जनवरी 1944, ढाई साल तक, उस शानदार नगर की घेरेबंदी कर तमाम रूसियों को भूख से मार डालना तय किया था! उसे झेल कर तमाम रूसी लड़ते रहे। अंत में बर्लिन तक जाकर हिटलर को हराया। उस युद्ध के चार साल में रूस की संपूर्ण युवा पुरूष आबादी के तीन चौथाई से अधिक मारे गये! वह रूस के लिए वैसा अपवाद युद्ध भी न था। उस से पहले प्रथम विश्व युद्ध, कम्युनिस्ट क्रांति, और गृह-युद्ध — यानी 1914 से 1921 के बीच — मात्र छः-सात वर्ष में 1 करोड़ रूसी मारे गये थे। जबकि रूस की कुल आबादी मात्र 18 करोड़ थी। और पीछे जाएं, तो 1812 में नेपोलियन की महान सेना ने मास्को को जलाकर राख कर दिया था। वह फ्रांसीसी सेना तब तक यूरोपीय इतिहास में सब से बड़ी थी! लेव टॉलस्टाय का कालजयी उपन्यास 'वार एंड पीस उसी पृष्ठभूमि पर लिखा हुआ है, जो विश्व का महानतम उपन्यास माना जाता है। उस से पहले 13-15 वीं सदी में मंगोल और तातार हमलावरों ने रयाजान, सुजदल, मॉस्को, त्वेर, कीव, रोस्तोव, आदि कितने ही रूसी नगरों का पूर्ण विनाश कर दिया था! मंगोलों ने रूस पर दो सदियों तक, 15वीं सदी के अंतिम चरण तक शासन किया। अंततः हारने के बाद भी मंगोल हमलावर क्रीमिया पर छापे मारते रहते थे। उन्होंने भी दो बार मास्को को जला डाला था और 16वीं सदी तक रूसियों को गुलाम बनाकर सीरिया, फारस और तुर्की बाजारों में बेचा। इसलिए, रूसी मानस में दोनेत्स्क, क्रीमिया, आदि केवल भौगौलिक क्षेत्र नहीं है। वह विदेशी हमलों, भयावह उत्पीड़न झेलने और लड़ने का ऐतिहासिक प्रतीक भी है। न केवल क्रीमिया रूस का ऐतिहासिक अंग है, बल्कि स्वयं उक्रेनी लोग भी 'छोटे रूसी कहे जाते रहे हैं। पहले सदियों तक रूस का नाम ही 'कीव-रूस था। पूरा उक्रेन ही रूस का अंग था। उसे सोवियत संघ का एक अलग प्रांत भी रूसी नेता लेनिन ने 1919 में बनाया। उस से पहले उक्रेन कभी रूस से अलग देश तो क्या, अलग प्रांत भी नहीं रहा था। अतः रूस-उक्रेन युद्ध भाइयों की लड़ाई है। चाहे दोनों के चरित्र में अब काफी अंतर क्यों न आ गया हो।

अतः, ऐतिहासिक रूप से रूसियों के लिए युद्ध उन के अस्तित्व का सामान्य अंग रहा है। रूसी सैन्य अकादमी के प्रमुख रहे निकोलाई सुखोतिन ने उन्नीसवीं सदी के अंत में हिसाब लगाकर बताया था कि उस से पिछली पाँच सदियों में रूस का लगभग दो तिहाई समय युद्ध लड़ते बीता है। उस के बाद, आगे बीसवीं सदी का हिसाब तो ऊपर देख ही चुके हैं। इसीलिए, रूसी समाज अपने सैनिकों और स्मारकों के प्रति जो विशेष और नियमित आदर स्थान रखता है, वह विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं है। मॉस्को में विवाह के बाद नवविवाहित जोड़ा सब से पहले 'अनाम सैनिक के स्मारक पर जाकर फूल चढ़ाता है। हिटलर पर जीत का दिन, 9 मई रूस में सब से बड़े राष्ट्रीय पर्व जैसा है, जिस में सभी रूसी समान श्रद्धा रखते हैं। ऐसा संभवतः दुनिया के किसी अन्य देश में नहीं है।

रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च ने अनेक रूसी योद्धाओं को संत की उपाधि दी है। इसलिए नहीं कि उन्होंने ऑर्थोडॉक्स चर्च को फैलाया या उस के मिशनरी थे, जैसा कैथोलिक चर्च परंपरा में है। बल्कि इसलिए कि उन रूसी योद्धाओं ने समाज की रक्षा की। दमित्री दोन्सकी, अलेक्जेंडर नेवस्की, और एडमिरल उसाकोव ऐसे कुछ ऐतिहासिक रूसी योद्धा रहे हैं, जिन्होंने मंगोलों, ट्यूटनों, या तुर्कों से लड़ कर मातृभूमि को मुक्त कराया, या उस की रक्षा की थी। उन्हें रूसी चर्च ने संत की उपाधियाँ दी। यह भी दुनिया में अपवाद है, कि सैनिक योद्धाओं को 'संत की उपाधि मिली। इसीलिए, रूसियों की भावना, संस्कृति और प्रतिक्रिया को अन्य देशों के सांस्कृतिक पैमाने से देखना भूल है। वैसे भी, भिन्न-भिन्न संस्कृतियाँ अपने कुछ विशिष्ट मानदंड रखती हैं। रूसियों पर तो यह और भी अधिक लागू है।

जर्मन-अमेरिकी राजनीति शास्त्री हान्स मार्गेन्थाऊ ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'पॉलिटिक्स एमंग नेशंस (1948) में 'राष्ट्रीय चरित्र पर एक विस्तृत और बड़ा रोचक अध्याय लिखा है। उस में, सौ सालों के अंतराल में रूसी चरित्र के दो अनोखे विवरण हैं। एक में द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद बर्लिन में एक रूसी सैनिक की दयालुता और दृढ़ता एक ही घटना में इक_ दिखाई गयी है। तब बर्लिन रूसी फौज के अधिकार में आ चुका था। वह वास्तविक घटना इस प्रकार हैः—

कोई रूसी सैनिक बारह जर्मन बंदियों को लाइन में लगाकर लिए जा रहे हैं। एकाएक नागरिकों में एक युवती चीख कर बंदियों में अपने पति/प्रेमी को पहचान लेती है। वह दौड़ कर आकर उस से लिपट जाती है। रूसी सैनिक उसे रोकता है। आस-पास के जर्मन लोग सकते में आ जाते हैं, क्योंकि फौजी कामों में बाधा डालने वाले को गोली मार देना सामान्य था। पर रूसी सैनिक युवती को सांत्वना देता है। फिर उस बंदी को अपने टॉमीगन से धक्का देकर आजाद कर देता है। पर कुछ देर में अपना सिगार जलाते हुए ठिठकता है, कि बंदियों की संख्या तो निश्चित थी। अपने गंतव्य पर उसे उतने ही बंदी सौंपने हैं, जितने चले थे। वह रूसी सैनिक आसपास चल रहे जर्मन नागरिकों पर नजर दौड़ाता है। उस में एक युवक को पकड़ कर बंदियों की पंक्ति में लगा देता है। संख्या पूरी हो गई। फिर मजे से सिगार जला कर बंदियों को निगरानी में लिए चलता है। मानो कुछ न हुआ हो! यह घटना 'टाइम मैगजीन के 21 अप्रैल 1947 अंक में छपी थी। ऐसे अनेक प्रकरण रूसियों का बिलकुल अलग चरित्र दिखाता है। दूसरों को उक्रेन पर रूसी प्रहार अत्यधिक निर्मम, अनुचित या बेबूझ लग सकता है। किंतु रूसी नजर से वह अस्तित्व की लड़ाई है। उन्होंने इतिहास में बार-बार वही देखा, झेला है। फिर यह तो है ही कि जर्मनी के एकीकरण के बाद, 1990-91 में अमेरिका ने वादा किया था कि नाटो जर्मनी से पूरब की ओर नहीं बढ़ेगा। परन्तु आने वाले दशकों में पोलेंड, हंगरी, और बाल्टिक देश नाटो में शामिल कर लिए गये। अब यूक्रेन की बारी थी, क्यों कि उक्रेनी नेता ही उस दिशा में बढ़ रहे थे। वह रूस के घर में घुस जाने के समान होता। तब पूतिन ने, सही या गलत, मान लिया कि अब रूस पर फिर अस्तित्व की लड़ाई वाला हमला निकट है। इसे अधिकांश रूसियों ने पुनः वैसे ही मर्मांतक प्रहार का आरंभ समझा जो मंगोलों, तातारों, फिर नेपोलियन, और हिटलर ने उन के साथ पहले किया था। सो, रूसी चरित्र उस के अनुभवों से बना है। यही कारण है कि आम रूसी इस मामले में पूतिन को मोटे तौर पर सही मानते हैं। क्यों कि उन की मानसिकता में युद्ध कोई बीते युग की चीज नहीं है। वह मानो चक्रीय गति से आता रहता है, जिस में समय-समय पर लगना रूसी लोग कर्तव्य मानते हैं। इसीलिए कितना भी कष्ट उठाकर, कोई भी कीमत देकर युद्ध लड़ना और जीतने का यत्न करना उन्हें सामान्य लगता है।

यहाँ रुसी कवि फ्योदोर त्युतचेव की कविता स्मरणीय हैंः ₹रूस को कोई माथा लगा कर नहीं समझ सकता। न सामान्य पैमाने से माप सकता है। वह देश अकेला खड़ा रहा है। रूस पर कोई केवल विश्वास ही कर सकता है।₹ यह 1866 में लिखी पंक्तियाँ आज भी लागू लगती है। रूस सचमुच अकेला है, और उसे सामान्य पैमाने से समझना कठिन है। अमेरिकी राष्ट्रपति कम से कम एक भूल जरूर कर रहे हैं। नाटो के विस्तार की नीति पर अमेरिका ने रूस को दिए वचन का उल्लंघन किया है। अब उस पर रूस की प्रतिक्रिया ऐसी नहीं, वैसी होनी चाहिए — यह विवाद, और राष्ट्रीय हितों की अपनी-अपनी समझ का प्रश्न है। जहाँ तक सपाट रूप से युद्ध के विरोधी, हर हाल में शांति-अहिंसा के गीत गाने वाले लोग हैं, तो कहना होगा कि उन्हें राजनीति की समझ नहीं। वे सुरक्षित, आरामदायक जीवन जीते हुए कल्पना से बातें करते हैं जो केवल सदिच्छाएं हैं। इस में रूस ही नहीं भारतीय इतिहास भी देखना चाहिए। भीरुता की हद तक शान्ति-प्रिय भारत सदियों से बर्बर आक्रमणकारियों द्वारा रौंदा जाता रहा। गत सौ साल में अंदरुनी जिहादियों द्वारा भी। क्या वह कभी सद्भावना से निपटने वाली बात थी, या है? हर मामले में शान्ति की दुहाई देने वाले ध्यान दें कि हथियार कभी भी बीते युग की चीज नहीं है। प्राचीन भारतीय ऋषियों, ग्रीक दार्शनिकों से लेकर आज तक के मनीषियों ने अस्त्र-शस्त्र कौशल को शिक्षा व चरित्र का अनिवार्य अंग माना है। आधुनिक महर्षि श्रीअरविन्द ने इस बिन्दु पर गाँधीजी की कड़ी आलोचना की थी, जो अपने जड़ अहिंसा-सिद्धांत को राजनीति में लागू करने की जिद रखते थे। जिस से उलटे बेहिसाब लोग जिहादियों द्वारा मारे गये। अहिंसा का सही अर्थ गीता में है। अकारण या द्वेष भरी चोट करना हिंसा है। पर कर्तव्य भाव से, द्वेषरहित होकर, आत्मरक्षा, या अतिक्रमित की रक्षा के लिए किया गया संहार कदापि हिंसा नहीं। इस में हिन्दू नेताओं ने भारी भूल की, जिस का दुष्परिणाम भारत गत सौ सालों से भुगत रहा है। अतः ट्रंप, जेलेन्स्की, और पूतिन के बीच इतिहास और शास्त्र, दोनों की सीख याद रखनी चाहिए।

अचानक कैसे बदल गया मौसम? बारिश से यूपी के कई जिलों में बढ़ी ठिठुरन, एक्यूआई से नहीं मिली राहत

आर्यावर्त संवाददाता

नोएडा। दिल्ली-एनसीआर से सटे नोएडा और ग्रेटर नोएडा में शुक्रवार सुबह से ही रुक-रुक कर हो रही बारिश ने मौसम का मिज़ाज पूरी तरह बदल दिया है। बारिश के चलते जहां तापमान में गिरावट दर्ज की गई है और ठिठुरन बढ़ गई है, वहीं लोगों को जिस राहत का इंतज़ार था, यानी प्रदूषण और खराब वायु गुणवत्ता से निजात, वह अब तक नहीं मिल सकी है। हल्की बारिश के बावजूद हवा पूरी तरह साफ नहीं हो पाई, जिससे आम लोगों की चिंता बढ़ती जा रही है।

सुबह से हो रही बूंदाबांदी के कारण वातावरण में नमी बढ़ गई है। न्यूनतम तापमान गिरकर 8 से 10 डिग्री सेल्सियस के आसपास पहुंच गया है, जिससे सर्दी का असर तेज हो गया है। लोग गर्म कपड़ों में लिपटे नजर आए। बारिश की वजह से सुबह के समय दफ्तर और रोज़मर्रा के कामों पर निकलने वाले लोगों को कंपकंपाती ठंड की दोहरी मार झेलनी पड़ी। सड़कों पर फिसलन बढ़ने से ट्रैफिक की रफ्तार भी धीमी रही।

AQI से राहत की उम्मीद अधूरी

बारिश शुरू होते ही लोगों को उम्मीद थी कि प्रदूषण और स्मॉग से कुछ राहत मिलेगी, लेकिन हल्की बारिश प्रदूषण को पूरी तरह खत्म करने में नाकाम साबित हुई। नोएडा और ग्रेटर नोएडा के कई इलाकों में वायु गुणवत्ता AQI अब भी खराब से बहुत खराब श्रेणी में बना हुआ है।

शुक्रवार सुबह नोएडा का AQI 349 दर्ज किया गया, जबकि ग्रेटर नोएडा का AQI 339 रहा। ये आंकड़े बहुत खराब श्रेणी में आते हैं और स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरे माने जाते हैं। हवा में जमे रहे जहरीले कण PM2.5 और PM10 जैसे सूक्ष्म और खतरनाक कण लंबे समय तक वातावरण में बने हुए हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि जब बारिश हल्की होती है और हवा की रफ्तार कम रहती है, तो प्रदूषण के कण नीचे बैठने के बजाय हवा में ही फंसे रहते हैं। यही वजह है कि बारिश के बाद भी हवा साफ नजर नहीं आ रही और स्मॉग की स्थिति बनी हुई है। सुबह के समय कई इलाकों में हल्की धुंध और प्रदूषण की परत देखने को मिली, जिससे दृश्यता भी प्रभावित हुई।

स्वास्थ्य पर सीधा असर

बारिश, ठंड और प्रदूषण के इस दोहरे असर का सबसे ज्यादा प्रभाव बच्चों, बुजुर्गों और पहले से बीमार लोगों पर पड़ रहा है। अस्पतालों और क्लीनिकों में खांसी, जुकाम, गले में खराश और सांस से जुड़ी शिकायतों के मामले बढ़ने लगे हैं। डॉक्टरों का कहना है कि ठंड के मौसम में शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो जाती है और अगर उसी समय प्रदूषण का स्तर भी अधिक हो, तो बीमारियों का खतरा कई गुना बढ़ जाता है।

ऐसे में विशेष सावधानी बरतना बेहद जरूरी है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार बच्चों और बुजुर्गों को अनावश्यक रूप से बाहर निकलने से बचना चाहिए। सांस की बीमारी से पीड़ित लोग मास्क का इस्तेमाल करें। ठंड से बचाव के लिए गर्म कपड़े पहनें और ठंडी हवा के सीधे संपर्क से बचें। सुबह-शाम की सैर फिलहाल टालना बेहतर रहेगा।

आगे कैसा रहेगा मौसम?

मौसम विभाग के अनुसार आने वाले कुछ दिनों में हल्की बारिश या बूंदाबांदी की संभावना बनी रह सकती है। तापमान में और गिरावट आ सकती है, जिससे ठंड और बढ़ेगी। हालांकि, जब तक तेज हवाएं या अच्छी बारिश नहीं होती, तब तक प्रदूषण से पूरी राहत मिलने की संभावना कम ही है।

उत्तर प्रदेश के मौसम का हाल?

उत्तर प्रदेश में ठंड और कोहरे का प्रकोप देखने को मिल रहा है। गुरुवार को प्रदेश के कई इलाकों में हल्की धूप हुई। लेकिन सर्द और पछुआ हवा ने से गलन बढ़ा दी है। सोनभद्र चार डिग्री सेल्सियस न्यूनतम तापमान के साथ सबसे ठंडा रहा प्रयागराज, वाराणसी, कानपुर, बरेली और गोरखपुर में घने कोहरे की वजह से दृश्यता शून्य दर्ज की गई। लखनऊ में दिन का पारा 16.9 और रात का 6.4 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। शुक्रवार को अधिकतम तापमान 19 और न्यूनतम सात डिग्री सेल्सियस रहने के पूर्वानुमान हैं।

दिल्ली-NCR में सुबह-सुबह हुई बारिश

शुक्रवार सुबह-सुबह अचानक बादल बरसने लगे। दिल्ली के कई इलाकों में हल्की-हल्की बूंदाबादी हुई। नोएडा में भी सुबह-सुबह बारिश हुई। भारतीय मौसम विभाग (IMD) के अनुसार अगले 2 घंटों के दौरान दिल्ली के मुंडका, पश्चिम विहार, राजौरी गार्डन, बुद्ध जयंती पार्क, राष्ट्रपति भवन, राजीव चौक, जाफरपुर, नजफगढ़, द्वारका, दिल्ली कैंट, पालम, आईजीआई हवाई अड्डा और एनसीआर के बहादुरगढ़, गाजियाबाद, नोएडा में कुछ स्थानों पर हल्की बारिश/बूंदाबांदी होने की संभावना जताई है।

कुल मिलाकर, नोएडा और ग्रेटर नोएडा में रुक-रुक कर हो रही बारिश ने मौसम को ठंडा तो कर दिया है, लेकिन प्रदूषण की समस्या जस की तस बनी हुई है। ठिठुरन बढ़ने के साथ-साथ खराब AQI ने लोगों की मुश्किलें और बढ़ा दी हैं। ऐसे में जरूरी है कि लोग सतर्क रहें, स्वास्थ्य से जुड़ी सावधानियां अपनाएं और मौसम के अगले बदलाव का इंतज़ार करें।

मौसम वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र कुमार एसजी का कहना है कि पश्चिमी यूपी में कहीं-कहीं बारिश होने की संभावना जताई गई है। हालांकि, आने वाले दिनों में मौसम साफ रहने की संभावना भी जताई गई है। दिल्ली-एनसीआर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कई जिलों में हल्की बारिश या बूंदाबांदी देखने को मिल सकती है, खासतौर पर सुबह और देर रात के समय मौसम में बदलाव के आसार बने हुए हैं।

नोएडा, ग्रेटर नोएडा, गाजियाबाद, बागपत, मेरठ, हापुड़, बुलंदशहर, फरीदाबाद, दिल्ली और गुरुग्राम में तेज बारिश की संभावना कम है, लेकिन हल्की बूंदाबांदी और बादलों की आवाजाही देखने को मिल सकती है। इस दौरान तापमान में तेज गिरावट और ठंडी हवाओं के चलते ठिठुरन और बढ़ सकती है।

अधिकारियों के मुताबिक हवा की रफ्तार फिलहाल काफी कम बनी हुई है। जब तक तेज हवाएं नहीं चलेंगी या लगातार अच्छी बारिश नहीं होगी, तब तक प्रदूषण के कण वातावरण में ही फंसे रहेंगे। इसी कारण AQI में अपेक्षित सुधार नहीं हो पा रहा है। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक जैसे ही पश्चिमी हवाओं में नमी सक्रिय होती है, तो वातावरण में नमी बढ़ जाती है। इसी नमी की वजह से तापमान तेजी से गिरता है, ठंडी हवाएं चलने लगती हैं और मौसम एकदम से बदल जाता है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि पिछले कुछ दिनों से मौसम शुष्क था, लेकिन पश्चिमी हवाओं के पहुंचते ही बादल छा गए और हल्की बारिश शुरू हो गई। इसी कारण लोगों को अचानक ठंड का अहसास होने लगा। मौसम विभाग के अनुसार हवा की रफ्तार इस समय काफी कम है। जब हवाएं तेज नहीं चलतीं, तो प्रदूषण के कण हवा में ही फंसे रहते हैं। यही वजह है कि बारिश होने के बावजूद हवा साफ नहीं हो पाई और AQI में कोई बड़ा सुधार देखने को नहीं मिला। वैज्ञानिकों ने यह भी बताया कि सर्दियों के मौसम में ऐसे बदलाव सामान्य होते हैं।

किसान नेता का अश्लील वीडियो वायरल...

बवाल के बाद बाराबंकी जिला कार्यकारिणी भंग, बोले : बदनाम करने के लिए AI से बनाया गया

आर्यावर्त संवाददाता

बाराबंकी। उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले के भारतीय किसान यूनियन भानू गुट के जिलाध्यक्ष राधा रमन वर्मा का एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। 46 सेकंड के इस वीडियो में किसान नेता कार में बैठकर एक व्यक्ति से किसी महिला के साथ अनैतिक संबंधों का जिक्र करते नजर आ रहे हैं। वीडियो के वायरल होते ही संगठन ने बड़ी कार्रवाई करते हुए अयोध्या मंडल और बाराबंकी जिले की पूरी कार्यकारिणी भंग कर दी है।

वायरल वीडियो में किसान नेता राधा रमन वर्मा अपनी कार की ड्राइविंग सीट पर बैठे नजर आ रहे हैं और बगल में बैठे किसी व्यक्ति से एक लड़की के बारे में बेहद अभद्र तरीके से बात कर रहे हैं। वीडियो में वह उस महिला के साथ कार्यालय के पास एक कमरे में कई बार शारीरिक संबंध बनाने की बात कह रहे हैं। इसके अलावा वह यह भी कहते सुनाई दे रहे हैं कि मैंने उस कमरे में AC भी लगवा दिया है और आप कहो तो मैं अभी उसे बुलाता हूं।

'AI से क्रिएट किया गया वीडियो'

वीडियो वायरल होने के बाद जब राधा रमन वर्मा से स्पष्टीकरण

मांगा गया तो उन्होंने इसे उन्हें बदनाम करने के लिए AI जेनरेटेड और काट-छांटकर बनाया गया वीडियो बताया। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि यह वीडियो काट-छांटकर वायरल किया गया है और इसमें AI से क्रिएट किया गया है। खालिद खान नाम के व्यक्ति ने यह वीडियो वायरल किया है। मैंने उसका कई बार उद्धार पैसे दिए हैं। जब मैं अपना पैसा मांग रहा हूं तो वह ऐसी हरकतें कर रहा है।

उन्होंने आगे कहा कि मैं कप्तान साहब से हाथ जोड़कर निवेदन करता हूं कि इस वीडियो की जांच हो। मैं खालिद खान के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दर्ज कराऊंगा। इस मामले पर भारतीय किसान यूनियन भानू गुट के युवा प्रदेश अध्यक्ष धर्मेंद्र यादव ने कहा कि जब यह वीडियो राष्ट्रीय अध्यक्ष के पास पहुंचा तो उन्होंने तुरंत प्रतिक्रिया करते हुए अयोध्या मंडल और बाराबंकी जिले की पूरी कार्यकारिणी भंग कर दी है।

नई कार्यकारिणी का गठन करने की कही बात

धर्मेंद्र यादव ने राधा रमन वर्मा का बचाव करते हुए कहा कि मैं राधा रमन वर्मा जी को 12-15 सालों से जानता हूं। वह ईमानदारी से किसान यूनियन में काम कर रहे हैं। जिला अध्यक्ष जी ने आरोप लगाया है कि उनके साथ साजिश हुई है और कोई अपना ही व्यक्ति इस वीडियो को काट-छांटकर मीडिया के सामने पेश कर रहा है। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं से धैर्य बनाए रखने की अपील करते हुए कहा कि बहुत जल्द राष्ट्रीय अध्यक्ष, प्रदेश अध्यक्ष और प्रदेश प्रभारी बैठक कर नई कार्यकारिणी का गठन करेंगे।

कायस्थ महासभा भाजपा के साथ : डा. इन्द्रसेन

आर्यावर्त संवाददाता

जौनपुर। भारतीय कायस्थ महासभा उप्र के प्रदेश अध्यक्ष डॉ0 इन्द्रसेन श्रीवास्तव ने शुक्रवार को भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नवीन सिन्हा से उनके दिल्ली कार्यालय पहुंचकर बधाई और शुभकामना देते हुए भाजपा को धन्यवाद ज्ञापित किया।उत्तर प्रदेश अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ इन्द्रसेन श्रीवास्तव भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नवीन से मुलाकात करते हुए सामाजिक और संगठनात्मक चर्चा करते हुए कहा कि वर्तमान समय में हासिये पर जा रहा कायस्थ समाज को भारतीय जनता पार्टी ने अपना राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बना कर हमारे समाज को गौरवान्वित किया है। कायस्थ समाज एक ऐसा समाज है जो शत प्रतिशत राष्ट्र धर्म को सदैव सर्वोपरि रखते हुए भारतीय जनता पार्टी के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहा है। मेरी अपेक्षा है कि अब हमारे अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के पूर्व राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष विश्व की सबसे बड़ी पार्टी भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बने हैं और अब अपने सामाजिक ताने-बाने को भी मजबूत करते हुए आगे बढ़े। कायस्थ महासभा इनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए तैयार है। राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री सिन्हा ने आस्वासन दिया कि कायस्थों के सम्मान को पार्टी पूरा सम्मान और हक दिलाने का प्रयास करेगी।

'हमें रोजी कौन देता है...अल्लाह ताला', शिक्षिका के सवाल का बच्चों ने दिया जवाब

आर्यावर्त संवाददाता

आजमगढ़। आजमगढ़ जिले के एक स्कूल का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें छोटे-छोटे बच्चों को मजहबी सवाल-जवाब सिखाते हुए सुना जा सकता है। वीडियो में स्कूल ड्रेस पहने पांच से छह साल के बच्चे खड़े नजर आ रहे हैं, जबकि शिक्षिका का चेहरा दिखाई नहीं दे रहा है, लेकिन उनकी आवाज स्पष्ट रूप से रिकॉर्ड हुई है।

वीडियो में बच्चों से पूछे जा रहे ये सवाल

वीडियो में शिक्षिका बच्चों से पूछती हैं कि तुम कौन हो, तुम्हारा मजहब क्या है, हमें रोजी कौन देता है, जमीन, आसमान, चांद और सूरज किसने बनाया। इन सभी सवालों के जवाब में बच्चे "मुसलमान" और "अल्लाह ताला"

कहते हुए सुनाई दे रहे हैं। इसके अलावा वीडियो में पैगंबर हजरत मोहम्मद साहब, कुरान शरीफ के नाजिल होने, रमजान और 'इकरा' जैसे धार्मिक विषयों से जुड़े सवाल-जवाब भी कराए जा रहे हैं।

सपा नेता से कनेक्शन

बताया जा रहा है कि यह वीडियो आजमगढ़ पब्लिक स्कूल का है, जिसकी मान्यता सीबीएसई बोर्ड से है। स्कूल रानी की सराय थाना क्षेत्र के चेकपोस्ट के पास कोटिला इलाके में स्थित है। स्कूल का संबंध सपा के विधान परिषद सदस्य शाह आलम उर्फ गुड्डू जमाली से बताया जा रहा है, जबकि स्कूल के डायरेक्टर नोमान बताए जा रहे हैं। वीडियो सामने आने के बाद इसे लेकर तरह-तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं। कुछ लोग इसे शिक्षा के नाम पर मजहबी शिक्षा देने का मामला बता रहे हैं, जबकि कुछ लोग इसकी निष्पक्ष जांच की मांग कर रहे हैं। डीएम रविंद्र कुमार ने मामले की जांच कर आवश्यक कार्रवाई करने की बात कही है।

नेपाल में सड़क हादसे में मबीबीएस छात्र की मौत, 10 मार्च को होनी थी शादी, नोएडा के गांव में मातम

आर्यावर्त संवाददाता

नोएडा। नोएडा के जिस घर में कुछ ही महीनों बाद शहनाइयों की गूंज होनी थी, जहां शादी की तैयारियों की हलचल थी, वही घर अचानक मातम में डूब गया। नोएडा के नयाबांस गांव निवासी एक होनहार युवक, जो डॉक्टर बनने का सपना लेकर नेपाल गया था, उसकी सड़क हादसे में मौत की खबर ने पूरे इलाके को स्तब्ध कर दिया। बेटे की पढ़ाई पूरी होने और डॉक्टर बनने की खुशी में डूबा परिवार अब उसकी अर्थी को कंधा देने को मजबूर हो गया। परिजनों के अनुसार, नयाबांस गांव निवासी प्रिंस नेपाल में एमबीबीएस की पढ़ाई कर रहा था। उसने हाल ही में अपनी पढ़ाई पूरी की थी और नेपाल के ही एक अस्पताल में इंटर्नशिप कर रहा था। परिवार को इस बात की बेहद खुशी थी कि अब उनका बेटा जल्द

डॉक्टर बनकर ग्रेटर नोएडा लौटेगा और परिवार का सहारा बनेगा। परिवार ने बताया कि बेटे को पढ़ाने के लिए उन्होंने वर्षों तक संघर्ष किया। सीमित संसाधनों के बावजूद बेटे की पढ़ाई में कभी कोई कमी नहीं आने दी। बेटे की मेहनत रंग ला रही थी और वह एक उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ रहा था।

अचानक हुए सड़क हादसे ने छीन ली जिंदगी

परिवार की खुशियों पर उस समय ग्रहण लग गया, जब नेपाल में एक सड़क दुर्घटना में युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। बताया गया कि अस्पताल से निकलते समय किसी अज्ञात वाहन ने उसे पीछे से टक्कर मार दी। हादसे के बाद उसे तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया गया, लेकिन गंभीर चोटों के कारण इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। जैसे ही यह खबर नोएडा स्थित परिवार तक पहुंची, पूरे घर में कोहराम मच गया। मां बेसुध हो गईं, वहीं पिता बेटे की तस्वीर को देखकर बार-बार यही कहते रहे-हमने तो बेटे को डॉक्टर बनने भेजा था, उसकी लाश लेने नहीं।

नेपाल से लाया गया शव

हादसे की जानकारी मिलने के बाद परिजन नेपाल पहुंचे और सभी औपचारिकताएं पूरी कर शव को भारत लाया गया। जैसे ही बेटे का शव गांव पहुंचा, पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई। सैकड़ों लोग परिवार को सांत्वना देने पहुंचे, लेकिन पिता नेपालाल अवाना बेटे की मौत के गम से उबर नहीं पा रहे थे। गमगीन माहौल में अंतिम संस्कार किया गया। हर आंख नम थी और हर कोई यही कह रहा था कि इतनी कम उम्र में एक होनहार जिंदगी यूं खत्म हो जाना बेहद दुखद है।

10 मार्च को होनी थी शादी

परिजनों ने बताया कि युवक की शादी आगामी 10 मार्च को तय थी। घर में शादी की तैयारियां शुरू हो चुकी थीं। कपड़ों और गहनों की खरीदारी चल रही थी। परिवार बेटे की पढ़ाई पूरी होने और शादी को लेकर बेहद उत्साहित था। लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। जिस बेटे के लिए शादी के कार्ड छप रहे थे, उसी की अर्थी उठानी पड़ी। मां बार-बार यही सवाल करती रही—जिस बेटे की सेहरा देखने वाली थी, उसकी चिता कैसे देख लूं। बेटे की मौत के बाद परिवार पूरी तरह टूट गया है। पिता नेपालाल अवाना गहरे सदमे में हैं। उन्होंने बताया कि बेटा ही उनका सबसे बड़ा सहारा था। अब समझ नहीं आ रहा कि जिंदगी कैसे आगे बढ़ेगी। परिजनों के अनुसार, प्रिंस बेहद मिलनसार और मेहनती था। गांव के लोग उसे शुरू से ही एक जिम्मेदार और होनहार छात्र के रूप में जानते थे। उसकी मौत से न सिर्फ परिवार, बल्कि पूरा इलाका सदमे में है। घटना के बाद नयाबांस गांव और आसपास के क्षेत्रों में शोक का माहौल है। स्थानीय लोग बड़ी संख्या में परिवार के घर पहुंचे और गहरी संवेदना व्यक्त की। ग्रामीणों का कहना है कि यह सिर्फ एक परिवार की नहीं, पूरे समाज की क्षति है।

करोड़ों के आर्डर होल्ड... वेनेजुएला-अमेरिका तनाव से मुरादाबाद के पीतल कारोबार संकट में, क्या है व्यापारियों की चिंता?

आर्यावर्त संवाददाता

मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश का मुरादाबाद पीतल नगरी के रूप में प्रसिद्ध है। यहां का हस्तशिल्प उद्योग न केवल भारत की पहचान है, बल्कि लाखों कारीगरों और श्रमिकों की आजीविका का प्रमुख साधन भी है। लेकिन अमेरिका और वेनेजुएला के बीच बढ़ते राजनीतिक और सैन्य तनाव ने मुरादाबाद के पीतल निर्यात को गंभीर संकट में डाल दिया है। इसका सीधा असर यहां के निर्यातकों, कारीगरों और छोटे उद्योगों पर दिखाई देने लगा है।

व्यापारियों के अनुसार, वेनेजुएला और अन्य लैटिन अमेरिकी देशों के लिए भेजे गए करीब 80 करोड़ रुपये मूल्य के पीतल उत्पाद रास्ते में ही फंस गए हैं। कई विदेशी खरीदारों ने अपने ऑर्डर फिलहाल होल्ड कर दिए हैं, जबकि कुछ ऑर्डर पूरी तरह रद्द भी कर दिए गए हैं। यदि

यह माल तय समय पर गंतव्य तक नहीं पहुंचता है, तो भुगतान में भारी दिक्कतें आने की आशंका है, जिससे निर्यातकों की आर्थिक स्थिति और अधिक कमजोर हो सकती है।

1500 करोड़ रुपये का कारोबार

आंकड़ों के अनुसार, मुरादाबाद से वेनेजुएला और लैटिन अमेरिकी देशों में सालाना लगभग 1500 करोड़ रुपये का कारोबार होता है। इसमें अकेले वेनेजुएला की हिस्सेदारी करीब साढ़े छह प्रतिशत बताई जा रही है। एंटरप्रेन्योर्स एसोसिएशन (ईवाईएस) के पदाधिकारियों का कहना है कि इस तनाव का सबसे ज्यादा असर गिफ्ट आइटम और डेकोरेटिव उत्पादों पर पड़ा है। बाजार में अस्थिरता बढ़ने से निर्यातक बेहद चिंतित हैं और बीमा (इंश्योरेंस) से जुड़े जोखिम भी बढ़ते जा रहे हैं।

निर्यात में आई गिरावट से मुरादाबाद के एक्सपोर्टरों के सामने गंभीर आर्थिक संकट खड़ा हो गया है। जिन उत्पादों को पहले ही विदेश भेजा जा चुका है, उनका भुगतान अटकने से नकदी प्रवाह पूरी तरह बाधित हो गया है। इसका असर उत्पादन इकाइयों पर भी पड़ रहा है और कई फैक्ट्रियां बंदी की कगार पर पहुंच गई हैं। हालात ऐसे बने तो हजारों कारीगरों के बेरोजगार होने का खतरा है। मजदूरी समय पर न मिलने से कारीगर परिवारों के सामने रोजमर्रा की जरूरतों का संकट खड़ा हो सकता है। निर्यातकों को आशंका है कि भुगतान न मिलने की स्थिति में करोड़ों रुपये का नुकसान उठाना पड़ेगा।

ऑर्डर कैंसल या होल्ड होने से पेमेंट अटका

वेनेजुएला के साथ तनाव के चलते इंश्योरेंस क्लेम को लेकर भी समस्याएं सामने आ रही हैं। ऑर्डर कैंसल या होल्ड होने से भुगतान अटक गया है, जबकि भुगतान ही इस उद्योग की रीढ़ माना जाता है। ईवाईएस के पदाधिकारियों ने चेतावनी दी है कि यदि हालात जल्द नहीं सुधरे तो बीमा से जुड़े दावे भी प्रभावित हो सकते हैं, जिससे उद्योग की स्थिति और खराब हो जाएगी। ऐसे में एक्सपोर्टर नए और वैकल्पिक बाजारों की तलाश कर रहे हैं, लेकिन इतने बड़े कारोबार का नुकसान भरपाई करना आसान नहीं है।

क्या बोले व्यापारी?

पीतल का कारोबार करने वाले व्यापारी सलमान अतीक का कहना है कि अमेरिका और वेनेजुएला के बीच जिस तरह का तनाव चल रहा है, उसका सीधा असर एक्सपोर्ट पर पड़ेगा। माल फंसे रहने से यदि भुगतान नहीं होता है तो निर्यातक आगे कारीगरों और सप्लायरों को भुगतान नहीं कर पाएंगे। वहीं, ईपीसीएच (EPCH) के सीओए सदस्य नावेद उर रहमान के अनुसार, अमेरिका और वेनेजुएला के बीच बढ़ते तनाव के कारण एक्सपोर्टर्स के ऑर्डर रुक गए हैं। इस अनिश्चितता के माहौल में कई कंपनियों ने हस्तशिल्प उत्पादों का उत्पादन कम कर दिया है। मुरादाबाद एसईजेड एक्सपोर्टर संगठन के अध्यक्ष विकास अरोड़ा ने कहा कि अमेरिकी नीतियों के कारण पहले से ही निर्यातकों की मुश्किलें बढ़ी हुई थीं। अमेरिका द्वारा लगाए गए टैरिफ ने व्यापार को प्रभावित किया और अब अमेरिका-वेनेजुएला तनाव ने नई चिंताएं पैदा कर दी हैं। आने वाले दिनों में यदि यह अंतरराष्ट्रीय विवाद और गहराया, तो निर्यात कार्यों में और अधिक बाधाएं आ सकती हैं।

ब्लॉक प्रमुख चुनाव में उतरेगें पूर्व सीडीओ यशवंत सिंह

आर्यावर्त संवाददाता

जौनपुर। विकास विभाग में तीन दशक से अधिक तक सेवा देने के बाद यशवंत सिंह ने डोभी ब्लॉक प्रमुख पद के लिए दावेदारी की घोषणा की है।

जिला मुख्यालय के पत्रकार भवन में वार्ता के दौरान उन्होंने कहा कि 01 नवंबर 2024 को मुख्य विकास अधिकारी/संयुक्त विकास आयुक्त पद चित्रकूट से सेवानिवृत्त होने के बाद उन्होंने अपने पैतृक निवास कछवन, डोभी में रहकर क्षेत्र की समस्याओं और जरूरतों को जमीनी स्तरसे समझना शुरू किया। उन्होने बताया कि विकास विभाग में लंबे अनुभव के कारण उन्हें विकास से जुड़ी विभिन्न योजनाओं की गहरी जानकारी है, जिसका लाभ डोभी क्षेत्र के विशेषकर गरीब और वंचित वर्ग को दिलाने में वे सक्षम हैं। क्षेत्र भ्रमण के दौरान आम जनता और जनप्रतिनिधियों से मिले व्यापक समर्थन और आग्रह के बाद उन्होंने ब्लॉक प्रमुख पद का चुनाव लड़ने का निर्णय लिया।

उन्होंने कहा कि डोभी क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से प्रबुद्धजनों, प्रशासनिक अधिकारियों, शिक्षाविदों और सामाजिक संस्कारों के लिए जाना जाता रहा है, लेकिन वर्तमान में राजनीतिक सबलता के लिहाज से क्षेत्र कमजोर पड़ा है। डोभी की सामाजिक, सांस्कृतिक, वैचारिक और शैक्षिक विरासत को पुनः सशक्त करने के उद्देश्य से उन्होंने यह कदम उठाया है। यशवंत सिंह ने जनता को आश्वासन दिया कि यदि उन्हें अवसर मिला तो वे विकास योजनाओं का व्यापक प्रचार प्रसार कर प्रभावी क्रियान्वयन कराते हुए क्षेत्र की खोई हुई गरिमा और सम्मान को वापस लाने के लिए पूरी निष्ठा से कार्य करेंगे।

बोर्ड एग्जाम का समय धीरे-धीरे पास आ रहा है। ऐसे में बच्चों के साथ ही पेरेंट्स की भी चिंता बढ़ने लगती है। बच्चे पढ़ाई में इतना ज्यादा बिजी हो जाते हैं कि स्ट्रेट बढ़ जाता है। लेकिन आज हम आपको इस आर्टिकल में रिवीजन के कुछ ऐसे जापानी तरीके बताने जा रहे हैं, जो सिलेबस याद रखने में मदद करेंगी।

बोर्ड एग्जाम का सिलेबस नहीं भूलेगा बच्चा, ये जापानी तरीका रिवीजन में आएगा काम

आज के समय में बोर्ड एग्ज़ाम सिर्फ एक परीक्षा नहीं, बल्कि बच्चों पर डाला गया एक मानसिक दबाव बन चुका है। बोर्ड एग्ज़ाम का नाम सुनते ही घर का माहौल बदल जाता है। बच्चे चुप-चुप से किताबों में सिर झुका लेते हैं, मां-बाप की चिंता चेहरे पर साफ दिखने लगती है और हर बातचीत का अंत सिर्फ एक ही सवाल पर होता है रिवीजन हो गया?। ऐसे में बच्चों पर स्ट्रेस बढ़ जाता है। जिसकी वजह से बच्चे पढ़ते तो हैं, लेकिन जवाब याद ही नहीं रह पाते।

घंटों किताब खोलकर बैठते हैं, पर दिमाग भरा-भरा सा महसूस होता है। जैसे-जैसे एग्ज़ाम नज़दीक आता है, वैसे-वैसे टेंशन और डर और ज्यादा बढ़ जाता है। यही वजह है कि कई बार बच्चा पूरा सिलेबस पढ़ने के बाद भी सवाल भूल जाता है। ऐसे में अगर चलिए आपको बताते हैं ऐसी जापानी ट्रिक, जो रिवीजन में बहुत काम आ सकती है।

कायदान होशिकी यानी स्टेयर स्टेप मेथड

ये एक जापानी तरीका है, जो बच्चों को पढ़ाई में काफी हेल्प करता है। कायदान होशिकी (Stair-Step Method) में पूरा सिलेबस एक साथ न पढ़कर उसे छोटे-छोटे लेवल में बांटकर रिवीजन किया जाता है। पहले आसान टॉपिक, फिर मीडियम और लास्ट में कठिन टॉपिक पढ़े जाते हैं, जिससे घबराहट कम होती है और कॉन्फिडेंस बढ़ता है।

एक्टिव रिकॉल आएगा काम

एक्टिव रिकॉल में किताब बंद करके खुद से सवाल पूछे जाते हैं, जैसे, परिभाषा लिखो, फॉर्मूला याद करो या पिछले साल के प्रश्न हल करो। ये तरीका याददाश्त को मजबूत करता है और परीक्षा में जल्दी उत्तर लिखने में मदद करता है।

शिकाकु-का ट्रिक आजमाएं

शिकाकु-का (Visualization) में चैप्टर को पिक्चर, चार्ट, फ्लो-डायग्राम, टाइमलाइन और माइंड-मैप के रूप में याद किया जाता है। इससे लंबे उत्तर भी आसानी से याद रहते हैं और कॉन्सेप्ट साफ होते हैं।

ऑडूको तरीका भी है अच्छा

आडूको (तेजी से पढ़ना) में उंगली या पेन की मदद से पढ़ना, अनावश्यक शब्द छोड़ना और मुख्य पॉइंट पर फोकस करना सिखाया जाता है। इससे कम समय में पूरा सिलेबस दोहराया जा सकता है।

जीको सेट्सुमेई

ये भी जापानी तरीका है, जो रिवीजन में बहुत काम आता है। इसमें टॉपिक और फॉर्मूला याद रखने में काफी मदद करती है। इसमें आपको पढ़ते वक्त ऐसा पढ़ना होता है, जैसे आप किसी और को पढ़ा रहा हैं। जब आप इस तरह से पढ़ेंगे तो जवाब लंबे समय तक याद रहेंगे।

कैंपटी फॉल्स, लाल टिब्बा ही नहीं मसूरी के पास की ये ऑफबीट जगहें भी हैं देखने लायक

मसूरी के नज़दीक मौजूद कुछ अनदेखी जगहें ऐसे हैं, जो आज भी भीड़-भाड़ से बची हुई हैं। ऐसे में अगर आप इस बार मसूरी घूमने का प्लान बना रहे हैं, तो कैंपटी फॉल्स और लाल टिब्बा के साथ-साथ इन ऑफबीट डेस्टिनेशंस को भी अपनी ट्रैवल

उत्तराखंड की रानी कही जाने वाली मसूरी अपने सुहावने मौसम, बादलों से ढकी वादियों और हरियाली के लिए जानी जाती है। आमतौर पर जब भी मसूरी घूमने की बात होती है तो लोगों के ज़हन में सबसे पहले कैंपटी फॉल्स, लाल टिब्बा, मॉल रोड और गन हिल जैसे मशहूर टूरिस्ट फ्लेस ही आते हैं। यही वजह है कि इन जगहों पर साल भर भारी भीड़ देखने को मिलती है। लेकिन मसूरी सिर्फ इन्हीं पॉपुलर जगहों तक सीमित नहीं है। इसके आसपास कई ऐसी ऑफबीट और कम जानी-पहचानी जगहें भी मौजूद हैं, जो आज भी भीड़-भाड़ से दूर अपनी नेचुरल खूबसूरती और शांति को संजोए हुए हैं।

अगर आप उन लोगों में से हैं जो घूमने के दौरान सिर्फ तस्वीरें खींचने के बजाय नेचर के करीब वक्त बिताना चाहते हैं, शांत पहाड़ी रास्तों पर चलना पसंद करते हैं और भीड़ से अलग कुछ नया देखना चाहते हैं, तो मसूरी के पास मौजूद ये ऑफबीट टूरिस्ट प्लेसेज़ आपके लिए परफेक्ट हैं। चलिए इस आर्टिकल में आपको बताते हैं, ऐसी ही कुछ अनदेखी जगहें, जहां एक बार जाना तो बनत है।

झड़ीपानी वॉटरफॉल जरूर देखें

मसूरी से लगभग 9 km दूर, घने जंगलों के बीच छुपा ये वाटरफॉल एक शांत और कम-भीड़ वाली जगह है इस जगह के बारे में अबतक बहुत कम लोग ही जानते हैं, जिसकी वजह से आप यहां जाकर अकेले कुछ पल सुकून के पल बिता सकते हैं। यहां पहुंचने के लिए थोड़ी सी हाइक या ट्रेकिंग भी करनी पड़ती है। इसके आसपास आपको छोटे गांव, हरे-भरे रास्ते और पक्षियों की आवाज सुनाई देगी।

Cloud's End भी है शानदार जगह

मसूर गए और क्लाउड एंड नहीं देखा तो क्या देखाये मसूर का सबसे दूर और शांत हिस्सा। यहां जाकर आपको लगेगा कि पहाड़ और बादल आपसे में मिल रहे हैं। यहां से आप दीप-घाटी और बर्फ से ढ़के हिमालय का सुंदर नजारा देख सकते हैं। यहां पहुंचने के लिए आपको मसूरी की लाइब्रेरी बाजार से टैक्सी या जीप लेकर हाथीपांव रोड पहुंचना होगा। वहां से हैप्पी वैली से ट्रेक करके यहां तक पहुंचा जा सकता है।

परी टिब्बा भी देखने लायक

परी टीब्बा का मतलह होता है Hill of the Fairies। ये बेहद सुंदर पैनोरमिक व्यू और मिस्टिक वाइब के लिए जाना जाता है। खासतौर पर यहां का सनसेट का नजारा देखने लायक होता है। लेकिन कई लोग इसे हॉंटेड प्लेस की वजह से जाने जाते हैं। कहते हैं कि, शाम होते ही यहां अजीबो-गरीब आवाज सुनाई देती है। यही वजह है कि, लोग शाम होते ही यहां से वापस आने लगते हैं। Pari Tibba

हैप्पी वैली भी जाए

मसूरी के टिब्बती समुदाय वाला ये इलाका, शांति, छोटी-छोटी दुकानें और स्थानीय संस्कृति के लिए जाना जाता है। ये जगह मसूरी के लाइब्रेरी बस स्टैंड से सिर्फ 4 किलोमीटर दूर है। यहां का मनमोहक व्यू आपका दिल जीत लेगा। ऊंचे-ऊंचे पहाड़, घास के मैदान और देवदार के पेड़ और झरने इसे खूबसूरत बनाते हैं। इसे मिनी तिब्बत के नाम से भी जाना जाता है। यहां पहुंचने के लिए आप टैक्सी या जीप लेकर जा सकते हैं।

मसूरी की वाइल्ड लाइफ सेंचुरी

मसूरी की वाइल्डलाइफ सेंचुरी भी देखने लायक जगह है। ये देवदार-ओक के जंगलों में स्थित है।अगर आप ट्रेकिंग, पक्षी-देखना या जंगलों में शांति चाहते हैं तो ये आपके लिए परफेक्ट है। यहां आपको बाघ, तेंदुआ, हिरन जैसे कई जानवर देखने को मिल जाएंगे। लेकिन यहां जाने के लिए आपको एक गाइड जरूर ले जाना होगा। सेंचुरी मसूरी से 11 किलोमीटर दूर है। यहां आप टैक्सी या जीप लेकर जा सकते हैं।

बेबी पालक है पोषक तत्वों का भंडार, इससे बनाकर खाएं ये 5 अनोखे पकवान

पालक तो सभी के घरों में बनती है, लेकिन इसकी एक खास किस्म के बारे में काफी कम लोग जानते हैं। हम बात कर रहे हैं बेबी पालक की, जिसे छोटी पालक नाम से भी जाना जाता है। यह आम पालक की तुलना में कम कड़वी होती है और इसे कच्चा भी खाया जा सकता है। यह विटामिन, मिनरल, एंटीऑक्सीडेंट, फाइबर और प्रोटीन का भंडार होती है। आप बेबी पालक से ये व्यंजन बना सकते हैं, जिनकी रेसिपी आसान है।

बेबी पालक का लजानिया

सबसे पहले पैन में तेल गर्म करें और लहसुन, प्याज, नमक, काली मिर्च और बेबी पालक को भून लें। इस मिश्रण को निचोड़कर इसका पानी निकाल दें और अलग रख दें। मिक्सी में रिकोटा चीज, परमजान चीज, जायफल, क्रीम, नमक, काली मिर्च और ओरिगैनो पीस लें। इसमें बेबी पालक वाला मिश्रण डालकर दोबारा पीसें। मक्खन, मैदा, दूध और चीज मिलाकर वाइट सॉस तैयार करें। बेकिंग ट्रे पर लजानिया शीट, दोनों सॉस और चीज की लेयर लगाते जाएं और बेक करें।

ग्रीन स्मूदी

अगर आप बेबी पालक से कुछ पीने के लिए बनाना चाहते हैं तो ग्रीन स्मूदी सही रहेगी। इसके लिए सबसे पहले एक ब्लेंडर में बेबी पालक को पीस लें। इसके बाद इसमें बादाम का दूध, एक केला, आधा कप जमे हुए फल और एक चम्मच सब्जा के बीज डालकर दोबारा पीस लें। इसे गिलास में निकालें और सुबह नाश्ते के वक्त सेवन करें। यह स्मूदी फाइबर से समृद्ध होगी और आपके शरीर को ताकत से भर देगी।

बेबी पालक और स्ट्रॉबेरी का सलाद

बेबी पालक से बनने वाला स्ट्रॉबेरी सलाद बेहद स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है। इसे बनाने के लिए सबसे पहले प्याज, चेरी टमाटर और खीरे को टुकड़ों में काट लें। ड्रेसिंग बनाने के लिए एक कटोरे में सिरका, जैतून का तेल, खसखस, शहद, सरसों, नमक और काली मिर्च मिलाएं। एक बड़े कटोरे में सभी सब्जियां, बेबी पालक और कटी हुई स्ट्रॉबेरी मिलाएं। अब ऊपर से ड्रेसिंग छिड़कें और आनंद लेकर खाएं।

बेबी पालक वाला पेस्तो पास्ता

पास्ता के शौकीन हैं तो एक बार बेबी पालक वाला पेस्तो पास्ता बनाएं। इसके लिए कटोरे में पानी गर्म करें और उसमें तेल और नमक डालकर पास्ता उबाल लें। इसे छानकर अलग रखें और एक कटोरी में पास्ता का पानी बचा लें। सॉस बनाने के लिए बेबी पालक, बेजिल, लहसुन, चिलगोजे के बीज, जैतून का तेल, चीज और नमक पीसें। एक पैन में सॉस को पकाएं, उसमें पास्ता और उसका बचा हुआ पानी शामिल करें और चीज डालकर खाएं।

बेबी पालक का सूप

सर्दियों में सूप पीना दिल को खुश कर देता है। इस मौसम में आप बेबी पालक का पौष्टिक सूप बना सकते हैं, जो गर्माहट के साथ-साथ पोषण भी देगा। इसके लिए पैन में जैतून का तेल गर्म करें और उसमें लहुसन और प्याज भूनें। इसमें आलू डालकर पकाएं और सब्जियों का शोरबा शामिल करें। इसके बाद इसमें बेबी पालक डालें और अच्छी तरह पकने दें। सूप को ब्लेंड करें और नमक, काली मिर्च और क्रीम मिलाकर पिएं।

86 प्रतिशत भारतीयों के लिए ज्वेलरी सबसे अहम संपत्ति, नई पीढ़ी तेजी से अपना रही नया ट्रेंड : रिपोर्ट

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत में लगभग 86 प्रतिशत लोग सोने और आभूषणों (ज्वेलरी) को संपत्ति बनाने का एक अच्छा साधन मानते हैं। यह संख्या लगभग म्यूचुअल फंड और शेयरों जैसे बाजार से जुड़े निवेश विकल्पों के बराबर है, जिन्हें 87 प्रतिशत लोग पसंद करते हैं।

इससे साफ है कि गहनों की अहमियत आज भी बहुत ज्यादा है। बुधवार को जारी डेलॉइट इंडिया की रिपोर्ट में यह बात कही गई है।

डेलॉइट इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार, भारत का ज्वेलरी मार्केट तेजी से बदल रहा है। अब लोग आभूषणों को सिर्फ शादी या परंपरा से नहीं जोड़ते, बल्कि अपनी पहचान, जीवनशैली और रोजमर्रा के पहनावे का हिस्सा भी मानते हैं।

रिपोर्ट में कहा गया है कि 56 प्रतिशत लोग ज्वेलरी को, निवेश और फैशन, दोनों के रूप में देखते हैं। वहीं, 28 प्रतिशत लोग केवल निवेश के रूप में गहने खरीदते हैं। इससे पता चलता है कि आभूषणों की भूमिका अब सिर्फ सेविंग्स तक सीमित नहीं रही।

रिपोर्ट के अनुसार, पुरुष और 45 वर्ष से अधिक उम्र के लोग आभूषणों को ज्यादा निवेश के रूप में खरीदते हैं। वहीं, युवा वर्ग गहनों में स्टाइल, अपने हिसाब से डिजाइन और अलग-अलग तरह से पहनने की सुविधा को ज्यादा महत्व देता है।

रिपोर्ट के मुताबिक, जेनजी और युवा पीढ़ी तेजी से हल्के और रोज पहनने वाले गहनों की ओर रुख कर रही है। 51 प्रतिशत जेनजी को चांदी और 34 प्रतिशत को प्लेटिनम वाली ज्वेलरी पसंद है। करीब 49 प्रतिशत लोग हल्के और सादे गहनों को भारी और ज्यादा सजावटी गहनों से ज्यादा पसंद करते हैं।

रिपोर्ट में बताया गया कि 45 प्रतिशत जेनजी और युवा सिल्वर की ज्वेलरी में निवेश करना पसंद करते हैं। इसकी वजह है अच्छा डिजाइन, कम कीमत और आसानी से खरीदना। अब चांदी को सोने के साथ रोजमर्रा के इस्तेमाल के लिए भी चुना जा रहा है।

डेलॉइट इंडिया के अनुसार, पहले भारत में लगभग 70 प्रतिशत गहने शादियों के लिए खरीदे जाते थे, लेकिन अब यह समीकरण बदल रहा है। युवा जन्मदिन और सालगिरह (38 प्रतिशत), रोजाना और ऑफिस में पहनने वाले परिधान (32 प्रतिशत) और पदोन्नति व पढ़ाई जैसी करियर संबंधी उपलब्धियों के लिए आभूषण खरीदते हैं।

रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि 49 प्रतिशत लोग अंगूठियां, चेन और कान की बालियां जैसे गहनों को निजी और गैर-धार्मिक मौकों के लिए पसंद करते हैं, जो पारंपरिक भारी गहनों से ज्यादा हैं। हालांकि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का असर बढ़ रहा है, लेकिन गहनों के मामले में लोग अब भी दुकान पर जाकर उसे खरीदना ज्यादा भरोसेमंद मानते हैं।

रिपोर्ट के अनुसार, आने वाले समय में आभूषण उद्योग की तरक्की के लिए बेहतर कामकाज, सही योजना और भरोसे पर ध्यान देना सबसे जरूरी होगा।

भारत वैश्विक मोर्चे पर सौर ऊर्जा और एआई में बना अहम साझेदार, जानिए क्या कहती है डब्ल्यूईएफ की रिपोर्ट

भू-राजनीतिक तनाव के बावजूद वैश्विक सहयोग स्थिर, लेकिन 'शांति और सुरक्षा' के मोर्चे पर भारी गिरावट। भारत सौर ऊर्जा और AI में अहम साझेदार बनकर उभरा।

दुनिया भर में जारी भारी भू-राजनीतिक उथल-पुथल के बावजूद वैश्विक सहयोग ने उम्मीद से बेहतर लचीलापन दिखाया है। हालांकि, मौजूदा आर्थिक, सुरक्षा और पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए यह सहयोग अभी भी पर्याप्त नहीं है। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम (डब्ल्यूईएफ) ने गुरुवार को जारी अपनी 'ग्लोबल को-ऑपरेशन बैरोमीटर 2026' रिपोर्ट में यह बात कही है।

मैकिन्से एंड कंपनी के सहयोग से तैयार किए गए इस बैरोमीटर का यह तीसरा संस्करण है। इसमें पांच प्रमुख स्तंभों- व्यापार और पूंजी, नवाचार और तकनीक, जलवायु और प्राकृतिक पूंजी, स्वास्थ्य और कल्याण, तथा शांति और सुरक्षा- के आधार पर वैश्विक सहयोग का आकलन किया गया है।

शांति और सुरक्षा में सबसे बड़ी गिरावट

रिपोर्ट के अनुसार, जहां अन्य क्षेत्रों में स्थिरता देखी गई है, वहीं 'शांति और सुरक्षा' के स्तंभ में सबसे बड़ी गिरावट दर्ज की गई है। इस श्रेणी के सभी मेट्रिक्स कोविड-19 महामारी से पहले के स्तर से नीचे चले गए हैं। संघर्षों में वृद्धि और सैन्य खर्च बढ़ने के कारण वैश्विक बहुपक्षीय समाधान तंत्र संकटों को कम करने में संघर्ष करते दिखे। रिपोर्ट बताती है कि 2024 के अंत तक दुनिया भर में जबरन विस्थापित लोगों की संख्या रिकॉर्ड 12.3 करोड़ (123 मिलियन) तक पहुंच गई थी।

दुनिया में बदल रहा सहयोग का तरीका

रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया में सहयोग का स्वरूप बदल रहा है। जहां बड़े बहुपक्षीय रास्तों के जरिए देशों के बीच सहयोग कमजोर हुआ है, वहीं क्षेत्रों के भीतर और बीच में छोटे, लेकिन नए समझौते हो रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक प्राथमिकताओं पर प्रगति तब सबसे तेज दिखती हैं, जब वे राष्ट्रीय हितों के साथ मेल खाती हैं- विशेष रूप से जलवायु और तकनीक के क्षेत्रों में।

डब्ल्यूईएफ के प्रमुख बोर्गे ब्रेंडे ने कहा, 'दशकों की सबसे अस्थिर और अनिश्चित अवधि के बीच वैश्विक सहयोग ने लचीलापन दिखाया है। आज का सहयोग कल जैसा नहीं दिख सकता है, लेकिन अर्थव्यवस्थाओं को बुद्धिमानी से बढ़ाने और अनिश्चित दौर की चुनौतियों के लिए तैयार करने के लिए लचीले और उद्देश्य-संचालित दृष्टिकोण आवश्यक हैं'।

सौर ऊर्जा और तकनीक में भारत ग्लोबल लीडर

रिपोर्ट में भारत की भूमिका को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है। 'लो-कार्बन गुड्स' (कम कार्बन वाले सामान) का व्यापार वैश्विक सहयोग का एक बड़ा विकास इंजन बनकर उभरा है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं ने विनिर्माण को बढ़ाने और कीमतें कम करने में मदद की, इससे उभरती अर्थव्यवस्थाओं को फायदा हुआ। डब्ल्यूईएफ के अनुसार, भारत ने 2025 में चीन के बाद दुनिया में सबसे अधिक सौर ऊर्जा क्षमता जोड़ी है। किफायती सोलर मॉड्यूल तक पहुंच ने भारत और ब्राजील जैसे देशों में इंस्टॉलेशन को तेज करने में अहम भूमिका निभाई।

इसके अलावा, तकनीक और संसाधनों के संवेदनशील प्रवाह में भी 'समान विचारधारा वाले साझेदार' सहयोग गहरा कर रहे हैं। रिपोर्ट में भारत, खाड़ी देशों, जापान और यूरोप के बीच आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सहयोग का हवाला दिया गया है। साथ ही, अमेरिका और उसके सहयोगियों (यूरोप, खाड़ी और भारत) के बीच एआई डेटा सेंटर, सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन और 5G इंफ्रास्ट्रक्चर जैसी महत्वपूर्ण तकनीकों में साझेदारी बढ़ रही है।

यूपीआई से जुड़ा नया नियम लागू, गूगल पे, फोन पे, पेटीएम यूजर्स ध्यान दें! गलती की तो अकाउंट होगा ब्लॉक

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत में डिजिटल भुगतान का सबसे लोकप्रिय माध्यम बन चुके क्कड्ड को लेकर एक नया और सख्त नियम लागू किया गया है। इस नियम के तहत अगर यूजर ने जरूरी जानकारी अपडेट नहीं रखी या मोबाइल नंबर इनएक्टिव है, तो उसका क्कड्ड अकाउंट अस्थायी या स्थायी रूप से ब्लॉक किया जा सकता है। नए नियम के अनुसार, हर क्कड्ड अकाउंट का एक सक्रिय और वैध मोबाइल नंबर से जुड़ा होना अनिवार्य है। अगर मोबाइल नंबर बंद हो चुका है, लंबे समय से इस्तेमाल में नहीं है या अपडेट नहीं किया गया है, तो उस क्कड्ड ड्डष्ठ को जोखिम भरा मानते हुए उस पर रोक लगाई जा सकती है।

यह कदम डिजिटल फ्रॉड और गलत लेन-देन को रोकने के लिए उठाया गया है। कई मामलों में बंद मोबाइल नंबर किसी अन्य व्यक्ति को जारी हो जाते हैं, जिससे पुराने क्कड्ड अकाउंट के गलत इस्तेमाल का खतरा बढ़ जाता है।

इस नियम का असर सभी क्कड्ड प्लेटफॉर्म जैसे त्रशशद्दद्यद्द क्कड्ड4, क्कद्धशठ्ठद्गक्कद्द और क्कड्ड4ह्लद्व पर समान रूप से लागू होगा। नियमों की अनदेखी करने पर पेमेंट फेल होने, अकाउंट सस्पेंड होने और रोजमर्रा के डिजिटल भुगतान प्रभावित होने की आशंका है।

अकाउंट सुरक्षित रखने के लिए क्या करें

अकाउंट को ब्लॉक होने से बचाने के लिए यूजर्स को सलाह दी गई है कि वे बैंक से जुड़े मोबाइल नंबर को एक्टिव रखें, नंबर बदलने पर तुरंत अपडेट करें, समय-समय पर क्कड्ड का इस्तेमाल करते रहें और ड्यड्ढष्ट प्रक्रिया पूरी रखें।

अमेरिकी सांसद की खामेनेई को खुलेआम धमकी, बोले- ट्रंप तुम्हें मार डालेंगे

तेहरान/वाशिंगटन, एजेंसी। वेनेजुएला में घुसकर अपदस्थ राष्ट्रपति निकोलस मादुरो पर की गई अमेरिकी कार्रवाई ने पूरी दुनिया में भूचाल मचा दिया है। इस बीच ट्रंप लगातार ग्रीनलैंड को लेकर बयानबाजी कर रहे हैं। अब अमेरिकी नेता ने ईरान के सुप्रीम लीडर को जान से मारने की धमकी दी है। अमेरिकी सीनेटर और रिपब्लिकन नेता के लिंडसे ग्राहम ने ऐसा बयान दिया है, जिसने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सनसनी फैला दी।

'राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप मार देंगे', अमेरिकी सांसद की धमकी

अमेरिका और ईरान के बीच पहले से ही जारी तनाव अब और बढ़ गया है। अमेरिकी रिपब्लिकन सीनेटर

(सांसद) लिंडसे ग्राहम ने ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई को कड़ी चेतावनी जारी करते हुए कहा है कि अगर ईरानी अधिकारी प्रदर्शनकारियों को मारना या घायल करना जारी रखते हैं तो राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप घातक कार्रवाई का सहारा ले सकते हैं। उन्होंने अपने बयान में साफ कहा कि अगर ईरानी नेतृत्व अपने ही लोगों के खिलाफ हिंसा जारी रखेगा तो अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप उन्हें मार देंगे।

खामेनेई को बताया धार्मिक नाजी

उन्होंने खामेनेई को एक धार्मिक नाजी बताते हुए कहा कि वो एक धार्मिक नाजी है, जो अपने ही लोगों को मारता है और दुनिया को आतंकित करता है। ग्राहम ने यह टिप्पणी फॉक्स न्यूज पर अपनी मौजूदगी के दौरान कीं। जिसमें उन्होंने ईरान में चल रहे सरकार विरोधी प्रदर्शनों का जिक्र किया। 'द शॉन हैनिटी शो' के दौरान ईरानी नागरिकों को संबोधित करते हुए ग्राहम ने कहा कि हम आज रात आपके साथ खड़े हैं।

ईरान के लोगों से कहा- मदद आ रही है

मंगलवार (7 जनवरी) दिए अपने बयान में उन्होंने कहा कि अगर तुम अपने लोगों को बेहतर जीवन की मांग पर मारते रहे, तो डोनाल्ड जे. ट्रंप तुम्हें मार देंगे। अयातुल्ला और उसके गुंडों, अगर तुम ट्रंप की चेतावनी को चुनौती देते रहे, तो तुम सुबह मरे हुए पाए जाओगे। उन्होंने प्रदर्शनकारियों को आश्वस्त करते हुए यह भी कहा कि मदद आ रही है।

ट्रंप ने भी दी सख्त कार्रवाई की चेतावनी, अब तक 45 मौतें

ग्राहम की ये टिप्पणियां वाशिंगटन और तेहरान के बीच बढ़ते तनाव के बीच आईं। ट्रंप ने पहले ही चेतावनी दी थी कि अगर ईरानी प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलाई जाती रहीं तो अमेरिका कार्रवाई कर सकता है। ट्रुथ सोशल पर एक पोस्ट में ट्रंप ने चेतावनी दी कि अगर ईरान शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलाता है और उन्हें बेरहमी से मारता है, तो अमेरिका उनकी मदद के लिए आएगा। हम पूरी तरह से तैयार हैं और कार्रवाई के लिए तत्पर हैं। बता दें कि ईरान में बीते दो हफ्तों से जारी प्रदर्शनों में अब तक 45 लोगों की जान जा चुकी हैं, जबकि 2260 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया है।

'पहले गोली चलाएंगे, बाद में सवाल'; हमले की आशंका के बीच ट्रंप को डेनमार्क ने दी चेतावनी

कोपेनहेगन, एजेंसी। डेनमार्क ने अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को ग्रीनलैंड को लेकर एक कड़ी चेतावनी दी है। डेनमार्क के रक्षा मंत्रालय ने कहा है कि अगर किसी भी शक्ति द्वारा ग्रीनलैंड पर हमला किया जाता है तो उसके सैनिक पहले गोली चलाएंगे और बाद में सवाल पूछेंगे यानी बिना किसी अनुमति या आदेश का इंतजार किए तुरंत जवाबी कार्रवाई करेंगे। यह आदेश 1952 के ठंडे युद्ध के नियमों के तहत है, जो किसी भी विदेशी आक्रमण के जवाब में तुरंत प्रतिरोध की आवश्यकता को कहता है।

डेनिश रक्षा मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि यह 1952 का आदेश अब भी लागू है और इसका उद्देश्य किसी भी संभावित आक्रमण के मामले में तुरंत जवाब देना है। मंत्रालय ने कहा कि नियम के तहत सैनिकों को ऊपर के आदेश का इंतजार नहीं करना होगा, बल्कि हमले की स्थिति में तुरंत युद्ध में उतरना होगा।

ग्रीनलैंड आर्कटिक क्षेत्र में स्थित एक रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्वायत्त क्षेत्र है, जो डेनमार्क के शासन में आता है। ट्रंप प्रशासन ने हाल ही में इसे राष्ट्रीय सुरक्षा के लिहाज से अत्यंत महत्वपूर्ण बताया है और यह बात सामने आई है कि अमेरिका ग्रीनलैंड पर नियंत्रण हासिल करने के विकल्पों पर विचार कर रहा है, जिसमें सैन्य शक्ति का उपयोग भी शामिल हो सकता है।

इस चेतावनी के बीच यूरोपीय देशों में चिंता बढ़ी है। फ्रांस, जर्मनी और अन्य नाटो सदस्य ग्रीनलैंड की संप्रभुता का समर्थन कर रहे हैं और अमेरिका को सामूहिक रूप से स्थिति को शांत करने की अपील कर रहे हैं। फ्रांस के विदेश मंत्री ने कहा है कि यूरोपीय साझेदारों के साथ मिलकर प्रतिक्रिया देने की आवश्यकता है। हालांकि अमेरिकी प्रशासन का कहना है कि वह बातचीत और कूटनीतिक उपायों के लिए तैयार है, पर ट्रंप के आक्रामक रुख ने यूरोपीय नेताओं में बेचैनी पैदा कर दी है। डेनमार्क की प्रधानमंत्री मेटे फ्रेडरिक्सन ने भी स्पष्ट किया है कि ग्रीनलैंड बिकाऊ नहीं है और किसी भी प्रकार के आजमाए गए कब्जे को खंडित कर दिया जाएगा।

डेनमार्क की पीएम ने साफ शब्दों में ट्रंप से कहा, 'डेनमार्क साम्राज्य और ग्रीनलैंड नाटो का हिस्सा हैं। इसकी वजह से यह गठबंधन की सुरक्षा गारंटी के तहत आता है। डेनमार्क और अमेरिका के बीच पहले से ही एक रक्षा समझौता है, जो अमेरिका को ग्रीनलैंड तक व्यापक पहुंच प्रदान करता है।' उन्होंने कहा, 'इसी आधार पर मैं अमेरिका से आग्रह करती हूं कि वह ऐतिहासिक रूप से घनिष्ठ सहयोगी और एक ऐसे देश और लोगों के खिलाफ धमकियां देना बंद करे, जिन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि वे बिकने वाले नहीं हैं।'

ट्रंप ने मादुरो को माफ करने से किया इनकार, वेनेजुएला हमले पर यूक्रेन से तुलना को भी ठुकराया

वॉशिंगटन/काराकास, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने वेनेजुएला के अपदस्थ राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को माफी देने से साफ इनकार कर दिया है। ट्रंप ने वेनेजुएला पर अमेरिकी कार्रवाई का बचाव करते हुए कहा कि मादुरो ने ड्रग तस्करी गिरोह के लोगों को अमेरिका भेजा था, जिससे देश को गंभीर खतरा हुआ।

ट्रंप ने एक इंटरव्यू में कहा 'मादुरो को माफ नहीं किया जाएगा। यह बहुत लंबे समय तक चलने वाला ऑपरेशन है और अमेरिका वेनेजुएला में लॉन्ग टर्म लक्ष्य लेकर आया है।' उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका वेनेजुएला के तेल का इस्तेमाल कीमतें कम करने में करेगा और काराकास को वित्तीय सहायता भी देगा। अमेरिकी प्रशासन की ओर से देश की अंतरिम राष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिग्ज के नेतृत्व वाली सरकार के

साथ काम सुचारू रूप से चल रहा है। हालांकि, रोड्रिग्ज ने हाल ही में ट्रंप को 'लालची' तक कह दिया।

रूस-यूक्रेन से तुलना खारिज

वेनेजुएला पर अमेरिकी हमले की तुलना रूस के यूक्रेन हमले या चीन-ताइवान विवाद से करने पर ट्रंप ने इसे खारिज कर दिया। उनका कहना था कि मादुरो ने सीधे तौर पर अमेरिका के लिए खतरा पैदा किया और यह स्थिति चीन या रूस जैसी नहीं है।

अमेरिका का टारगेटेड ऑपरेशन

3 जनवरी को अमेरिकी सेना ने वेनेजुएला में एक टारगेटेड ऑपरेशन किया। इसके बाद ट्रंप ने घोषणा की कि मादुरो और उनकी पत्नी को अमेरिका ले जाया गया है। ट्रंप ने यह कार्रवाई अमेरिकी सुरक्षा के लिए जरूरी बताते हुए देश में तस्करी और अन्य खतरों का हवाला दिया। ट्रंप का रुख साफ है कि वे मादुरो को माफ नहीं करेंगे और अमेरिका का यह कदम देश की सुरक्षा और रणनीतिक हितों के लिए लंबी अवधि की योजना का हिस्सा है।

किस वजह से अटका व्यापार समझौता, अमेरिकी वाणिज्य सचिव का बड़ा खुलासा, सिर्फ एक कॉल बनी वजह

वॉशिंगटन, एजेंसी। डोनाल्ड ट्रंप ने जब से अमेरिकी राष्ट्रपति पद संभाला है, तब से उनकी भारत के साथ रिश्तों में तल्खी सामने आ रही है। भारत पर अमेरिकी टैरिफ का दबाव जारी है। इसी के साथ हालिया टिप्पणी में इस भार को और बढ़ाने की आशंका जताई है। भारत के साथ चल रहे ट्रंप के रिश्तों के बीच अब अमेरिका के वाणिज्य सचिव हॉवर्ड लटनिक ने भारत-अमेरिका ट्रेड डील को लेकर एक बड़ा और नया खुलासा किया है।

एक फोन कॉल और अटकी रह गई ट्रेड डील

भारत-अमेरिका व्यापार समझौते को अभी तक अंतिम रूप न दिए जाने के कारण पर उन्होंने दावा करते हुए कहा कि व्यापार समझौता इसलिए अटका हुआ है, क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से बात नहीं की। उन्होंने दावे के साथ कहा कि

यह प्रधानमंत्री मोदी की ओर से ट्रंप को फोन न करने के कारण यह समझौता अटका हुआ है। हॉवर्ड लटनिक ने साफ कहा कि ट्रेड डील के अटकने के पीछे की वजह कोई नीतिगत मतभेद नहीं, बल्कि पीएम मोदी का ट्रंप को सीधे फोन नहीं करना है।

अमेरिका वाणिज्य मंत्री ने क्या बताया?

ऑल-इन पॉडकास्ट में बोलते हुए अमेरिकी वाणिज्य मंत्री लटनिक ने दावा किया कि ट्रेड डील की रूपरेखा पूरी तरह से तैयार थी, लेकिन उसे अंतिम रूप देने के लिए पीएम मोदी को डोनाल्ड ट्रंप से फोन पर बात करनी थी। बकौल लटनिक भारत सरकार इसके लिए सहज नहीं थी और आखिरकार यह कॉल नहीं की गई, जिसके चलते व्यापार समझौता अटक गया।

राज ठाकरे का बदला अंदाज, कहा- गंगा का पानी नहीं पिऊंगा, मुसलमानों पर बोले- महाराष्ट्र के मुस्लिम अलग

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र में जारी निकाय चुनाव को लेकर चुनाव प्रचार जोरों पर है। ठाकरे परिवार मिल कर निकाय चुनाव लड़ रहा है। शिवसेना (UBT) के नेता उद्धव ठाकरे और महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (MNS) के नेता राज ठाकरे साथ चुनाव प्रचार भी कर रहे हैं। अपने बयानों को लेकर चर्चा में रहने वाले राज ठाकरे ने सामना के साथ इंटरव्यू में कहा कि मैं मंदिर में माथा झुकाऊंगा लेकिन मैं गंगा का पानी नहीं पिऊंगा। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि हर राज्य का मुसलमान अलग होता है। महाराष्ट्र में पीढ़ियों से रहने वाला मुसलमान 'मराठी मुसलमान है।

लंबे समय बाद साथ आए ठाकरे बंधुओं (उद्धव और राज) के साथ शिवसेना के मुखपत्र सामना ने एक दिन पहले इंटरव्यू किया था। उद्धव ठाकरे के साथ साझा इंटरव्यू ने राज ठाकरे ने बेबाकी के साथ अपनी बात कही। इंटरव्यू के दौरान हिंदू मराठी मेयर के नरेटीव को राज ठाकरे ने नया मोड़ दे दिया और उन्होंने 'मराठी मुसलमान' का कार्ड चल दिया। यह इंटरव्यू संजय राउत और महेश

मांजरेकर ने लिया।

हर राज्य का हिंदू अलग : राज ठाकरे

एक सवाल के जवाब में राज ठाकरे ने कहा, "हर राज्य का हिंदू अलग होता है, क्योंकि हर राज्य की संस्कृति अलग होती है। उसी तरह हर राज्य का मुसलमान भी अलग होता है। महाराष्ट्र में पीढ़ियों से या कई सालों से रहने वाला मुसलमान 'मराठी मुसलमान है, वो मराठी भाषी है।" उन्होंने आगे कहा, "इसी मसले पर साल 2009 या 2010 में हज कमेटी के दफ्तर पर आंदोलन हुआ था। तब हज कमेटी पर उत्तर प्रदेश - बिहार और वहां के लोगों का वर्चस्व हुआ करता था और महाराष्ट्र के मराठी मुसलमानों को हज पर जाने नहीं दिया जा रहा था। उस समय हमारी पार्टी ने ही इसके लिए आंदोलन किया था। महाराष्ट्र में असंख्य मुसलमान हैं। हमारे सलीम मामा हैं और वे मराठी मुसलमान हैं।"

जहीर खान को लेकर क्या बोले राज

ऐसे में आप पर हिंदुत्व विरोधी होने की आलोचना हो सकती है?, के जवाब में राज ठाकरे ने कहा, "इसका हिंदुत्व से आखिर क्या संबंध है? मान लीजिए मैं कल मंदिर जाकर माथा टेकता हूं और आप मुझसे कहते हैं कि गंगा का पानी पियो तो में नहीं पिऊंगा। अब गंगा जहां से निकलती है। शायद वहां का पानी शायद पी लूं।" इस पर उद्धव ठाकरे ने कहा, "कल मैं अपने एक (मुस्लिम) उम्मीदवार के ऑफिस में गया था।" पूर्व भारतीय क्रिकेटर जहीर खान का जिक्र करते हुए राज ठाकरे ने कहा, किकेटर जहीर खान हैं वे भी मराठी हैं। यहीं संगमनेर के हैं। जब भी हम आमने-सामने मिलते हैं तो आपस में मराठी में ही गप्पे मारते हैं।

बीजेपी की भी एक्सपायरी डेट : राज ठाकरे

ठाकरे बंधुओं की संयुक्त बातचीत महाराष्ट्र की राजनीति में चर्चा का विषय बन चुकी है। ठाकरे बंधुओं के इंटरव्यू के दूसरा पार्ट आज सामना अखबार में छपा है। उद्धव और राज ने एक सुर में मराठी अस्मिता, मुंबई और महाराष्ट्र के भविष्य को लेकर बीजेपी पर तीखा हमला बोला। दोनों ने महाराष्ट्र की जनता से अपील करते हुए कहा, "हम एक साथ आ गए हैं, अब मराठी समाज को भी एकजुटता दिखानी होगी। मराठी समाज को हमें चुनकर भेजना होगा। मंराठी अस्मिता को बचाना समय की मांग है।" उन्होंने कहा कि मराठी मानुष को आपसी मतभेद और झगड़े भुलाकर महाराष्ट्र के हित को प्राथमिकता देना होगा। बीजेपी को लेकर उन्होंने दावा करते हुए कि बीजेपी की भी एक्सपायरी डेट है और चुनावी फायदे के लिए मराठी वोटों को तोड़ने की साजिशें की जा रही हैं। मुंबई के मुद्दे पर दोनों नेताओं ने साफ तौर पर कहा कि मुंबई का महापौर मराठी ही होगा। उन्होंने बीजेपी के उस बयान पर सवाल उठाया जिसमें महापौर को हिंदू बताया गया था। ठाकरे बंधुओं ने पूछा कि क्या मराठी हिंदू नहीं है? और इस तरह के बयानों को मराठी अस्मिता पर आघात बताया। उद्धव ठाकरे ने कहा, "हिंदुत्व के नाम पर नफरत नहीं, बल्कि समानता और न्याय होना चाहिए।" वहीं राज ठाकरे ने कहा कि महाराष्ट्र को अपनी दिशा खुद तय करनी होगी और देशभक्ति और किसी पार्टी की भक्ति अलग-अलग बातें हैं।

मजदूरों की रोजी-रोटी छीन रही सरकार... मनरेगा को लेकर आप कार्यकर्ताओं का केंद्र पर हमला

नई दिल्ली, एजेंसी। आम आदमी पार्टी ने नाभा के पटियाला गेट पर मनरेगा योजना को खत्म करने के विरोध में केंद्र सरकार के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया। सैकड़ों मनरेगा मजदूरों ने सड़कों पर उतरकर केंद्र के खिलाफ नारेबाजी की। रोजगार गारंटी योजना में गरीब विरोधी नीतिगत बदलावों के विरोध में अपना गुस्सा जाहिर किया।

पंजाब में आप विधायक गुरदेव सिंह देव मान ने कहा कि केंद्र अगर चाहे तो मनरेगा का नाम बदल सकता है, लेकिन इसकी नीति और मंशा में पूर्ण बदलाव स्वीकार्य नहीं। देव मान ने कहा कि मोदी सरकार ने मनरेगा की आत्मा ही बदल दी है। इसकी नई नीतियों का मकसद गरीबों को कुचलना, उनकी रोजी-रोटी का गला घोंटना और उन्हें और गरीबी में धकेलना है।

उन्होंने केंद्र पर उन लोगों के साथ धोखा करने का आरोप लगाया जिन्होंने अपनी कड़ी मेहनत से देश को बनाया है। उन्होंने कहा कि सड़कों और खेतों से लेकर ऊंची इमारतों तक, सुइयों से लेकर जहाजों तक, यह देश मजदूरों ने बनाया है। फिर भी आज उन्हीं मजदूरों पर हमले

हो रहे हैं। जिन्होंने 1947 से गरीबों की वोटें लेकर सरकारें बनाईं, वे अब उन्हें सजाएं दे रहे हैं।

देव मान ने पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान का विधानसभा का विशेष सत्र बुलाने और मनरेगा के हक में एकजुट होकर आवाज उठाने के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भगवंत मान की अगुवाई में पंजाब विधानसभा ने स्पष्ट रूप से केंद्र से मांग की है कि मनरेगा को उसके मूल स्वरूप में बहाल किया जाए और ये गरीब विरोधी बदलाव वापस लिए जाएं। उन्होंने कहा कि आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल, वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया, अमन अरोड़ा और पूरी पार्टी मनरेगा मजदूरों के साथ चट्टान की तरह खड़ी है।

मजदूरों के साथ एकजुटता की अपील

इस मौके पर आप नेता अमरीक सिंह बांगड़ भी मौजूद थे, जिन्होंने मजदूरों के साथ एकजुटता की अपील की और केंद्र की नीतियों की निंदा की। वहीं आप एससी विंग के अध्यक्ष गुरप्रीत सिंह जीपी ने कहा कि पार्टी मनरेगा के बचाव में प्रदेशव्यापी प्रदर्शनों की अगुवाई कर रही है। उन्होंने कहा कि आप पूरे पंजाब में प्रदर्शन कर रही है। कल हमने जालंधर में प्रदर्शन किया था, आज नाभा में और यह आंदोलन पूरे प्रदेश में तेज होगा। गुरप्रीत सिंह जीपी ने केंद्र सरकार पर किसानों, मजदूरों और पिछड़े वर्गों के अधिकारों पर लगातार हमले करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि पहले किसानों पर तीन काले कृषि कानून थोपे गए थे। फिर संविधान को कमजोर करने की कोशिशें हुईं। अब मनरेगा के नए कानूनों के जरिए कामकाजी महिलाओं और गरीब परिवारों पर सबसे ज्यादा मार पड़ रही है। हम इस बेइंसाफी को बर्दाश्त नहीं करेंगे। उन्होंने चेतावनी दी कि जब तक केंद्र बदलाव वापस नहीं लेता तब तक आंदोलन जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि हमारा संघर्ष तब तक जारी रहेगा जब तक मोदी ये मजदूर विरोधी नीतियां वापस नहीं लेते।

विराट कर्ण, नाभा नतेश नागबंधम की हाई-वोल्टेज क्लाइमेक्स सीक्वेंस की शूटिंग की

युवा नायक विराट कर्ण की आगामी अखिल भारतीय फिल्म नागबंधम एक और बड़ी उपलब्धि के साथ सुर्खियाँ बटोर रही है। दूरदर्शी फिल्म निर्माता अभिषेक नामा द्वारा निर्देशित और किशोर अन्नापुरेड्डी और निशिता नागिरेड्डी द्वारा भव्य पैमाने पर निर्मित, यह फिल्म हाल के समय की सबसे महत्वाकांक्षी पौराणिक एक्शन मनोरंजक फिल्मों में से एक बनने की ओर अग्रसर है।

इस बीच, टीम नानकरामगुडा स्थित रामानायडू स्टूडियो में रोंगटे खड़े कर देने वाले क्लाइमेक्स सीक्वेंस की शूटिंग कर रही है। निर्माताओं ने एक बेजोड़ दृश्य अनुभव देने में कोई कसर नहीं छोड़ी है—सिर्फ क्लाइमेक्स पर ही 20 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं, जिससे यह इस पैमाने की किसी भी अखिल भारतीय फिल्म में अब तक के सबसे महंगे सीक्वेंस में से एक बन गया है।

क्लाइमेक्स एक विशाल द्वार के चारों ओर बने एक विशाल सेट पर घटित होता है - प्रतीकात्मक, प्रभावशाली, और अंतिम भाग की भावनात्मक और नाटकीय तीव्रता को बढ़ाने के लिए तैयार किया गया। प्रोडक्शन डिज़ाइनर अशोक कुमार और उनकी टीम ने इस विशाल सेट का निर्माण बहुत ही बारीकी से किया है, यह सुनिश्चित करते हुए कि हर विवरण कहानी के पैमाने और रहस्य को बढ़ाए।

क्लाइमेक्स के ज़बरदस्त विज़न को जीवंत करने के लिए, टीम ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित थाई स्टंट मास्टर केचा खम्फाकडी को चुना, जो वैश्विक ब्लॉकबस्टर फिल्मों में अपनी अद्भुत गतिशील एक्शन कोरियोग्राफी के लिए जाने जाते हैं। उनकी विशेषज्ञता दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देने वाले स्टंट और युद्ध के दृश्यों को सुनिश्चित करती है, जिससे फिल्म की तीव्रता और भी बढ़ जाती है और ऐसा एक्शन जो जितना रोमांचक है उतना ही शानदार भी।

नागबंधम में एक शानदार कलाकार भी है, जिसमें नाभा नतेश और ईश्वर्या मेनन मुख्य भूमिका में हैं, जबकि जगपति बाबू, जयप्रकाश, मुरली शर्मा और बीएस अविनाश महत्वपूर्ण भूमिकाओं में हैं।

भारत के प्राचीन विष्णु मंदिरों की पृष्ठभूमि पर आधारित यह फिल्म, सदियों पुराने रीति-रिवाजों पर आधारित एक पवित्र और गुप्त परंपरा, नागबंधम से जुड़े रहस्य को उजागर करती है। पद्मनाभस्वामी और पुरी जगन्नाथ जैसे मंदिरों में हाल ही में हुई प्रमुख खजानों की खोज से प्रेरित होकर, यह कथा मिथक, रहस्य और दैवीय संरक्षण की एक मनोरंजक कहानी बुनती है। समकालीन दृष्टिकोण से, यह कहानी लंबे समय से भूले-बिसरे रीति-रिवाजों और आध्यात्मिक विरासतों की पुनर्कल्पना करती है, और पौराणिक कथाओं को रहस्य के साथ मिश्रित करती है।

दृश्यात्मक रूप से समृद्ध और बारीकी से तैयार की गई इस फिल्म की छायांकन का जिम्मा सौंदर राजन एस ने संभाला है, जबकि संपादन का काम आर.सी. प्रणव ने संभाला है। नागबंधम तेलुगु, हिंदी, तमिल, कन्नड़ और मलयालम में बहु-भाषा रिलीज के लिए तैयार है।

जैसे-जैसे उत्साह बढ़ रहा है, नागबंधम टीम जल्द ही प्रमोशनल गतिविधियों की शुरुआत करने की तैयारी कर रही है। रोमांचक टीज़र, पर्दे के पीछे की झलकियाँ और प्रशंसकों की इंटरैक्टिव बातचीत देखने के लिए तैयार हो जाइए, जो इस भव्य रिलीज़ के लिए उत्सुकता को और बढ़ा देंगी।

अभिषेक नामा की रचनात्मक प्रतिभा और दमदार कलाकारों के साथ, नागबंधम एक ऐतिहासिक फिल्म बनने के लिए तैयार है, जिसमें रोमांचकारी एक्शन के साथ गहरी भावनात्मक गहराई का मिश्रण है। यह एक ऐसा अनुभव है जिसे आप मिस नहीं करना चाहेंगे।

अपने कैलेंडर पर निशान लगाएँ और नागबंधम पर नज़र बनाए रखें। यह सिनेमाई सफ़र अविस्मरणीय होने का वादा करता है।

आलिया भट्ट ने की रणवीर सिंह की फिल्म 'धुरंधर' की तारीफ, लिखा- 'आज के भारत की आवाज...'

आलिया भट्ट ने रणवीर सिंह और आदित्य धर की फिल्म 'धुरंधर' की तारीफ की है। उन्होंने सोशल मीडिया हैंडल पर 'धुरंधर' की पूरी टीम के लिए कुछ खास संदेश लिखा है।

आदित्य धर के निर्देशन में बनी जासूसी थ्रिलर फिल्म 'धुरंधर' 5 दिसंबर, 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज हुई। फिल्म लगातार बॉक्स ऑफिस पर अपना कमाल दिखा रही है। इसी बीच आलिया ने 'धुरंधर' की तारीफ में एक पोस्ट सोशल मीडिया हैंडल पर शेयर किया है और साथ ही 'धुरंधर' को 'आज के भारत की आवाज' बताया है।

आलिया भट्ट का पोस्ट

आलिया भट्ट अपने पति रणबीर कपूर और बेटी राहा के साथ नए साल की छुट्टियां मनाकर लौटी हैं। गुरुवार को उनके प्रोडक्शन हाउस 'एटरनल सनशाइन प्रोडक्शंस' के सोशल मीडिया पर 'धुरंधर' टीम के लिए एक संदेश पोस्ट किया गया। आलिया ने फिल्म को 'आज के भारत की आवाज' बताया और बहुत सराहाना की है।

आलिया भट्ट ने की 'धुरंधर' की तारीफ

Eternal Sunshine के सोशल मीडिया पर आलिया ने 'धुरंधर' के लिए लिखा और साथ ही इसे अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर शेयर किया। आलिया ने लिखा, 'यह आज के भारत की आवाज है। यह आज के भारत की पसंद है। यह इतिहास के एक अध्याय पर आधारित है। अब यह भारत के सिनेमा इतिहास का नंबर एक अध्याय बन गया है। 'धुरंधर' को सलाम। पूरी टीम को बधाई। आपने न सिर्फ धूम मचाई, बल्कि सिनेमाघरों में फिर से रौनक ला दी। अगर पहला भाग सर्दियों में इतना कमाल कर गया, तो दूसरा भाग वसंत में क्या करेगा?'

'धुरंधर' के बारे में

आज फिल्म 'धुरंधर' ने 35वें दिन गुरुवार को अभी तक 2.14 करोड़ रुपये का कलेक्शन कर लिया है। वहीं इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर अब तक 788.14 करोड़ रुपये की कमाई कर ली है। इस फिल्म में अक्षय खन्ना, संजय दत्त, आर. माधवन, अर्जुन रामपाल, राकेश बेदी, सारा अर्जुन, और दानिश पैंडोर जैसे कलाकारों ने अहम भूमिका निभाई है।

लक्ष्मी निवास में राधिका के लिए परिवार ही सब कुछ है : अक्षिता मुद्गल

अभिनेत्री अक्षिता मुद्गल जल्द ही जी टीवी के नए शो लक्ष्मी निवास में नजर आने वाली हैं। इस शो में वह राधिका के किरदार में हैं, जो लक्ष्मी और श्रीनिवास की बड़ी बेटी है। अक्षिता ने अपने किरदार के बारे में बात की और बताया कि राधिका के लिए परिवार ही सब कुछ है। अक्षिता मुद्गल ने अपने किरदार के बारे में बताया, राधिका एक ऐसी लड़की है जो परिवार के लिए कुछ भी करने को तैयार रहती है।

शो लक्ष्मी निवास भारत के मध्यमवर्गीय संयुक्त परिवारों की रोजमर्रा की जिंदगी पर आधारित है। यह सपनों, जिम्मेदारियों और एकजुटता की भावनात्मक कहानी दिखाता है। कई परिवारों की तरह यहां भी अपना घर बनाने और बच्चों का भविष्य सुरक्षित करने की उम्मीदें जुड़ी हैं। उन्होंने आगे बताया, राधिका का किरदार इस कहानी में नया भावनात्मक रंग जोड़ता है।

वह सरल, परिपक्व और पूरी तरह परिवार के लिए मेहनत करने वाली इंसान है। अपने माता-पिता की खुशी को वह अपनी खुशी से ऊपर रखती है। राधिका एक मजबूत और संयमित लड़की है, जिसके सपने परिवार की इच्छाओं से जुड़े हैं। वह अपनी इच्छाओं को पीछे रख परिवार के लिए त्याग करने को तैयार रहती है। यह किरदार कई भारतीय बेटियों की उन चुप्पी भरी कुर्बानियों को दिखाता है, जो संयुक्त परिवारों में आम हैं।

अक्षिता मुद्गल ने कहा, राधिका अपनी जिंदगी माता-पिता और परिवार के लिए जीती है। वह अपने भाई-बहनों से बहुत प्यार करती है और उसके लिए परिवार ही सब कुछ है। उसके सपने भी माता-पिता की इच्छाएं पूरी करने के इर्द-गिर्द घूमते हैं। अगर वे चाहें कि वह शादी करके सुखी हो जाए, तो वह इसके लिए तैयार है। यही उसकी भावनात्मक ताकत है। राधिका परिवार की अहमियत समझने वाली जमीनी इंसान है।

असल जिंदगी में मैं इससे काफी अलग हूं, लेकिन राधिका की दुनिया में कदम रखना अच्छा लग रहा है। शो की कहानी लक्ष्मी और श्रीनिवास के इर्द-गिर्द घूमती है, जो 35 साल से किराए के मकान में रह रहे हैं। उनके दो बड़े सपने हैं, अपना घर बनाना और बच्चों का घर बसाना। रश्मि शर्मा टेलीफिल्म्स के प्रोडक्शन में बना यह शो 12 जनवरी से जी टीवी पर प्रसारित होगा।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रभात पांडेय द्वारा साई ऑफसेट प्रिंटर्स 40, वासुदेव भवन कैसरबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 2/74, विक्रांत खंड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित। शाखा कार्यालय: S-15/109, सेक्टर -15, इंदिरा नगर, लखनऊ। समस्त लेख, रचनाओं एवं विज्ञापन में लेखन और विज्ञापनदाताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए आर्यावर्त क्रांति की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश ही होगा। RNI No: UPHIN/2014/57034 Website : aryavartkranti.com
*सम्पादक: प्रभात पांडेय सम्पर्क: 9839909595, 8765295384 Email: aryavartkrantidainik@gmail.com